

वेदों में आखिर क्या हैं??

ऋग्वेद

(अग्नि)

$E=MC^2$

यजुर्वेद

(वायु)

SPACE

सामवेद

(आदित्य)

VIBRATION

अथर्ववेद

(अंगिरा)

MEDICINE

"आयं गौः पृश्नि॑र॒क्र॒मी॒द॒स॒द॒न् मा॒तरं
पु॒रः। पि॒तरं॑ च प्र॒य॒न्त्स्वः"

यह पृथिवी जल और अग्नि के निमित्त से अन्तरिक्ष वा अपनी कक्षा
अर्थात् जल के सहित सूर्य के चारों तरफ क्षण-क्षण घूमती है।

यजुर्वेद अध्याय 3 मंत्र 6

VEDO ME AKHIR HAI KYA???

यजुर्वेद » अध्याय:3» मन्त्र:6

“आयं गौः पृश्नि॑र॒क्रमी॑द॒स॒द॒न् मा॒तरं॑ पु॒रः। पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त॑स्वः।”

देवता: अग्निर्देवता ऋषि: सर्पराज्ञी कद्रूऋषि: छन्द: निचृद् गायत्री स्वर: षड्जः

“जिससे यह भूगोल पृथिवी जल और अग्नि के निमित्त से उत्पन्न हुई अन्तरिक्ष वा अपनी कक्षा अर्थात् योनिरूप जल के सहित आकर्षणरूपी गुणों से सब की रक्षा करनेवाले सूर्य के चारों तरफ क्षण-क्षण घूमती है, इसी से दिन रात्रि, शुक्ल वा कृष्ण पक्ष, ऋतु और अयन आदि काल-विभाग क्रम से सम्भव होते हैं “

By SHREE

Contact For Query -

Email - sanatanirocks@gmail.com

Quora- SANATANIROCKS (Ask Questions)

Instagram - sanatanirocks007

Twitter - Sanataniroc

Facebook - Sanatani Shree

सुची

1. किताब का उद्देश	4
2. आखिर वेद क्या है?	6
3. वेदों में क्या है?	12
4. वेद मंत्र क्या है?	17
5. वेद ऋषिमुनि को कैसे मिले?	30
6. वेद मंत्र के अर्थ कैसे किये गये?	35
7. वेद कैसे पढ़े?	40
8. वेद में कितना विज्ञान है?	42
9. आधुनिक विज्ञान विरुद्ध वैदिक विज्ञान	73
10. हमारे संदर्भों की सूची	78

1. किताब का उद्देश

भारत का इतिहास बिल्कुल कितना पुराना है कोई नहीं जानता लेकिन इतना जानते हैं कि जब बाकी सारे देश आदि मानव की तरह रहा करते थे, हमारा भारत समृद्ध था।

हमारे देश को समृद्ध और शिक्षित के रूप में देखा जाता था क्योंकि हमारी प्राचीन संस्कृति जीवन उद्देश्य से भरी हुई थी। यहां तक कि लगभग 200 वर्षों तक भारत पर शासन करने वाले अंग्रेजों ने भी स्वीकार किया कि उन्होंने पूरी दुनिया में इतना अमीर देश नहीं देखा था। एक समय हम इस दुनिया के नेता थे लेकिन अब 1000 साल बाद हम लगभग चट्टान के निचले पायदान पर हैं। आजादी के 75 साल बाद भी हमें अभी भी यह पता लगाना बाकी है कि हम क्यों और कैसे अमीर और समृद्ध थे, जबकि अन्य लोग भोजन, कपड़ा और घर बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

महाभारत युद्ध के बाद हमारे देश में गुरु शिष्य रीति-रिवाजों की कमी के कारण हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की इमारतें ढहने लगीं। लोगों को नहीं पता था कि ज्ञान के स्रोत की तलाश कहां करें। और फिर प्रामाणिकता की इस कमी ने हमारे देश में कई आपदाएं लाईं, मैं उन सभी का नाम नहीं लूंगा।

उनमें से एक अंधविश्वास है जैसा कि हम सभी जानते हैं। कहावत है कि ज्ञान की कमी अंधविश्वास लाती है। लोग हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में गहरी खुदाई की ओर झुकने के बजाय झूठे वादों और काल्पनिक संतुष्टि की ओर झुकने लगे।

हम अमीर और शिक्षित थे क्योंकि हमारे पूर्वजों ने हमें अनमोल और मूल्यवान ज्ञान दिया था जिसे दुनिया ने अभी तक सूँघा भी नहीं था। जब मैं हम कहता हूँ तो मेरा मतलब ज्यादातर हिंदू कहना होता है। ये लोग खुद को गर्वित हिन्दू कहते हैं लेकिन ये भी नहीं जानते कि इनके शास्त्रों में ऐसा कोई शब्द है ही नहीं। 'हाँ', आपने वही पढ़ा जो मैंने अभी कहा। हिंदू इस ग्रह पर सबसे पुरानी सभ्यता हैं और अभी भी एक चट्टान की तरह खड़े हैं लेकिन अपनी संस्कृति और मूल्यों से अनजान हैं जो उन्होंने अन्य लोगों को दिए थे।

यह वास्तव में दुख की बात है कि उनके प्राचीन ऋषियों ने उन्हें मनुष्यों की तरह परिष्कृत रूप से जीवन जीने के लिए शानदार तकनीकें, विज्ञान, नैतिक मूल्य दिए हैं और वे इसके बारे में पूरी तरह से अनजान हैं।

हमारे प्राचीन ऋषियों को उनके उच्चतम ध्यान अवस्था के दौरान कोडित रूप में मूल्यवान ज्ञान दिया गया था, हम बाद में चर्चा करेंगे। उस ज्ञान को वेद कहा जाता है। 90 प्रतिशत हिंदू वेदों से अनभिज्ञ हैं। अपने शास्त्र का नाम भी नहीं जानते, दुनिया को क्या दिया है। यह वास्तव में किसी के लिए भी शर्मनाक बात होनी चाहिए जो खुद को हिंदू कहते हैं। मैंने वेदों नामक उनके मूल्यवान शास्त्रों को पढ़ा है और अभी भी आगे की चीजें सीख रहा हूँ।

मेरे कुछ दोस्तों ने उनके शास्त्र के बारे में कई सवाल पूछे, इसलिए मैंने सोचा कि मुझे मूल बातें शुरू करनी चाहिए और फिर आगे बढ़ना चाहिए। अतः यह ग्रन्थ केवल उन लोगों के लिए है जो वेदों के बारे में सर्वथा अनभिज्ञ हैं।

मैं न केवल हिंदुओं को बल्कि हमारे पूरे देश को यह बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि आप दुनिया के निर्माता हैं। मैं अग्रिम में माफी माँगता हूँ अगर मैं इस पुस्तक के माध्यम से राय में कुछ याद आती है और साथ ही, मैं पाठकों को मुझे सुझाव देने के लिए अनुमति देता हूँ यदि वे महसूस करते हैं।

नोट - अगर मैं हिंदी में सही ढंग से व्यक्त नहीं कर सका तो क्षमा करें।

ओ३म्

2. आखिर वेद क्या है?

यदि आप एक भारतीय हैं, तो आपने सोशल मीडिया एक्सपोजर के कारण इस शब्द के बारे में सुना होगा। अब सूर्य की परिक्रमा करने के बजाय कोर पर आते हैं। हमारे प्राचीन ऋषियों को उनकी उच्चतम ध्यान अवस्था के दौरान कुछ कोडित भाषा में अनमोल ज्ञान दिया गया था और उस ज्ञान को वेद कहा जाता है। यदि हम शब्दकोश में वेद शब्द का अर्थ जांचते हैं तो हम पाते हैं कि यह ज्ञान है।

वेद शब्द एक धातु से लिया गया है जिसे vid कहा जाता है जिसका अर्थ है जानना। इसलिए मूल रूप से, वेद जानने और समझने के लिए है और आँख बंद करके उनका पालन नहीं किया जाना चाहिए। अब प्रश्न उठता है कि वेद किस प्रकार के ज्ञान की बात करता है।

सबसे पहले, वेद पुस्तकों का समूह नहीं है, लेकिन वेद का अर्थ ही ज्ञान है और ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आप ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

- लेकिन यह किस प्रकार का ज्ञान है? किसने दिया और क्यों?

अच्छे सवाल। यदि आप इस धरती पर मनुष्यों के अलावा अन्य जीवित प्राणियों का निरीक्षण करते हैं (वर्तमान में मैं इस ग्रह पर विचार करते हुए मूल बातों पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ, लेकिन वेद आपको ब्रह्मांड के निर्माण के बारे में क्रिस्टल स्पष्ट विचार देता है।

वे जो पैदा होते हैं उसके लिए अपना जीवन जीते हैं। कुत्ते, बिल्ली, हाथी, बाघ, मछली, पक्षी और आदि। वे खाते हैं, सोते हैं, बच्चे पैदा करते हैं और अन्य नियमित सामान जो वे बार-बार करते हैं। तो, यह ब्रह्मांड बाहरी बल द्वारा संचालित होता है और वह बल अनंत सर्वोच्च शक्ति द्वारा लागू होता है।

हमारे प्राचीन ऋषि सर्वोच्च शक्ति के बारे में बात करते हैं जिन्होंने इस ब्रह्मांड का निर्माण किया जिसमें हम सभी जीवित प्राणी भी शामिल हैं। इस सर्वोच्च शक्ति को ईश्वर कहा जाता है। यह ईश्वर विशेष जीवित आत्माओं को उनकी क्षमता और उद्देश्यों के अनुसार आवश्यक ज्ञान देता है ताकि वे अपना जीवन जी सकें। यदि आप देखते हैं कि अन्य जीवित प्राणी अपने बुद्धि स्तर में सीमित हैं, लेकिन हम मनुष्यों को उच्च स्तर की समझ के साथ आशीर्वाद दिया जाता है।

हम आवश्यक ज्ञान के अनुसार खुद को बदल सकते हैं, लेकिन अन्य जीवित प्राणियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जब स्वतंत्र इच्छा तक सीमित पहुंच के कारण उनकी स्थिति बदलने की बात आती है। सभी जीवित प्राणियों या आत्माओं को स्वतंत्र इच्छा दी जाती है लेकिन स्वतंत्र इच्छा की मात्रा जीवित आत्मा से जीवित आत्मा में भिन्न होती है। अतः मनुष्य गहराई से अध्ययन कर सकता है और समझ सकता है कि इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई और किसने सृष्टि की और मनुष्य किस प्रकार जीवन जी सकता है ताकि मनुष्य में विद्यमान आत्मा को मुक्ति मिल सके जिसे मोक्ष भी कहा जाता है।

हमारे वेद इस बात का स्पष्ट विचार देते हैं कि इस ब्रह्मांड का निर्माण कैसे हुआ और प्रकृति के नियमों का पालन कैसे किया जाए ताकि हम मनुष्य सिर्फ खाने, सोने आदि से परे जा सकें। अन्य जीवित प्राणी यह नहीं समझते हैं, और अध्ययन करते हैं कि इस दुनिया को कैसे बनाया गया है, भोजन, पानी, आश्रय के लिए कैसे आभारी होना चाहिए और हमारी स्थिति को कैसे बदलना है। मनुष्य को उच्च स्तर की बुद्धि का आशीर्वाद प्राप्त है, यही कारण है कि हम उन अन्य जीवित आत्माओं को बेहतर जीवन जीने में सक्षम हैं।

जैसा कि मैंने पहले कहा था कि जब पूरी दुनिया जंगली जानवरों की तरह रह रही थी, तब हम भारतीय अमीर थे। यह वेद के ज्ञान के कारण है। मूलतः वेद हमें भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, चिकित्सा विज्ञान, कला आदि ज्ञान देता है।

विश्व में शिक्षा पद्धति की शुरुआत वैदिक वैज्ञानिकों ने की थी जिन्हें 'ऋषिमुनि' कहा जाता था। आप सोच सकते हैं कि आधुनिक विज्ञान ने हमें इस तरह का अधिकांश ज्ञान दिया है। नहीं, यह पूरी तरह सच नहीं है। बाद में मैं आपको संदर्भों के साथ दिखाऊंगा कि कैसे वेद अभी भी आधुनिक विज्ञान से आगे हैं। आधुनिक विज्ञान सीमित स्रोतों के साथ खुद को बेहतर बनाने के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत कर रहा है। लेकिन प्राचीन ऋषियों ने खुद को पूरी तरह से ईश्वर या भगवान नामक सर्वोच्च शक्ति को सौंप दिया और भगवान ने हमें आवश्यक ज्ञान दिया ताकि हम समझ सकें कि यह ब्रह्मांड, प्रकृति कैसे काम करती है और तदनुसार हम कार्रवाई करते हैं। इसलिए, हमारे ऋषियों ने वेदों के माध्यम से ज्ञान दिया जो हमारे लिए पर्याप्त है लेकिन यदि आप देखें कि आधुनिक विज्ञान अधिक से अधिक जटिल होता जा रहा है

वेदों में क्या है?

जिसने वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भ्रष्टाचार, घातक विश्व युद्ध, सामूहिक हत्याएं, तनाव, मानसिक आघात, चिंता और इतने सारे द्वारा हमारी पृथ्वी को नष्ट कर दिया है। लेकिन आपको हमारे ऋषियों द्वारा ऐसा कोई योगदान नहीं मिलता है।

हम प्रकृति के साथ जीने के लिए पैदा हुए हैं, लेकिन हम वैश्वीकरण, ग्लोबल वार्मिंग के नाम पर प्रकृति को नष्ट कर रहे हैं। इसलिए अब मुसलमान, ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच, पुर्तगाली जैसे कई आक्रमणकारियों द्वारा भारत पर लगातार आक्रमण के कारण यह अनमोल वैदिक संस्कृति नष्ट हो गई है। लेकिन अंततः, हमें चीजों को गंभीरता से नहीं लेने के लिए खुद को दोषी ठहराना चाहिए।

अब मुद्दे पर आते हैं, वेद मौखिक संचरण (oral transmission) के माध्यम से दिया गया ज्ञान है और फिर इसे मौखिक संचरण द्वारा अगली पीढ़ियों तक पारित किया जाता है। इसीलिए वेदों को श्रुति कहा जाता है। श्रुति का अर्थ है सुनना या सुनने के माध्यम से प्राप्त ज्ञान।

- कितने शास्त्र हैं?

खैर, यह इस बारे में नहीं है कि कितने प्रकार या किताबें हैं या कितनी किताबें हैं, लेकिन यह उस चैनल के बारे में है जिसके द्वारा हमें ज्ञान मिलता है।

अतः संचरण की विधि (mode of transmission) के अनुसार शास्त्र दो प्रकार के होते हैं -

- 1) श्रुति शास्त्र (जो सुना जाता है)



वेदों का मौखिक संचरण

वेदों में क्या है?

2) स्मृति शास्त्र (स्मृति में संग्रहीत)



वेदों का लेखन प्रारूप में ऋषि संग्रह

श्रुति का अर्थ है सुनने या ध्वनि से प्राप्त ज्ञान जो आप सुनते हैं, और वेद श्रुति शास्त्र हैं। वेद मूल रूप से पुस्तकें नहीं हैं, वास्तव में वेदों का अभ्यास वैदिक छंदों का जाप करके किया जाता है जिन्हें "मंत्र" कहा जाता है।

वेदों में केवल ज्ञान है, इतिहास नहीं। इतिहास इंसान ने लिखा है। जब मैं वेद के बारे में विस्तार से शुरू करता हूं, तो मैं समझाऊंगा कि वेदों में क्या है। जैसा कि मैंने कहा कि वेद श्रुति शास्त्र हैं, इसका मतलब है कि यह ज्ञान ध्वनि और सुनने के माध्यम से साझा किया गया था, इसलिए भ्रष्टाचार के प्रसारण के मोड में खड़े होने का मौका नहीं है क्योंकि ध्वनियां अद्वितीय हैं।

आप बाघ की दहाड़, कुत्ते के भौंकने, झरने, धातुओं और अधातुओं की नकली आवाज नहीं कर सकते हैं, इसलिए प्राचीन काल से जप और श्रवण द्वारा वैदिक छंदों का अभ्यास किया जाता है और दुनिया में कोई भी यह नहीं बता सकता कि यह कब शुरू हुआ था। दुनिया में कब कुत्ते भौंकने लगे या शेर दहाड़ने लगे ये कोई विज्ञान नहीं बता सकता। यह ध्वनि है, कोई भौतिक इकाई नहीं है जिसे हम कार्बन डेटिंग के लिए यह अनुमान लगाने के लिए कर सकते हैं कि यह कितना पुराना है।

वेदों में क्या है?

वेद हमें आत्मा की मौलिक अवस्था प्रकृति, पदार्थ, सर्वोच्च शक्ति, मनुष्य की तरह जीवन कैसे जीएं, कैसे कृतज्ञ हों, गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, गायन द्वारा भगवान की स्तुति कैसे करें और अन्य पूजा विधियों के बारे में बताते हैं।

वेद वैदिक संस्कृत में लिखे गए हैं और लिखित ग्रंथों में संकलित होने से पहले पारंपरिक रूप से मौखिक संचरण के माध्यम से संरक्षित किए गए थे। वे अपने आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व के लिए हिंदू धर्म में अत्यधिक पूजनीय हैं, हिंदू धार्मिक प्रथाओं, अनुष्ठानों और दार्शनिक विचारों के विकास को प्रभावित करते हैं।

हिंदू परंपरा के अनुसार, वेदों की रचना किसी एक लेखक या लेखकों के समूह द्वारा नहीं की गई थी, बल्कि दिव्य प्रेरणा या रहस्योद्घाटन के माध्यम से प्राचीन ऋषियों (ऋषियों) को प्रकट की गई थी। इस प्रक्रिया को "श्रुति" के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ संस्कृत में "जो सुना जाता है" है। मान्यता यह है कि इन ऋषियों ने, गहरे ध्यान या आध्यात्मिक अनुभवों के दौरान, ब्रह्मांडीय चेतना या दिव्य क्षेत्र से सीधे भजन और छंद प्राप्त किए।

यहाँ एक सामान्य समझ है कि वेदों को हिंदू परंपरा के अनुसार कैसे प्रसारित किया गया था:

ऋषि और उनके रहस्योद्घाटन: प्राचीन ऋषि, जिन्हें ऋषि के रूप में जाना जाता है, वे द्रष्टा थे जो आध्यात्मिक ज्ञान और ध्यान के प्रति गहराई से अभ्यस्त थे। अपनी तप (तपस्या) और आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से, उन्होंने चेतना की स्थिति प्राप्त की जहां उन्हें गहन अंतर्दृष्टि और ज्ञान प्राप्त हुआ। मौखिक संचरण: प्रारंभ में, वेदों को शिक्षक (गुरु) से शिष्य (शिष्य) को मौखिक रूप से प्रेषित किया गया था। इस मौखिक परंपरा ने यह सुनिश्चित किया कि ग्रंथों को पीढ़ियों से सटीक रूप से संरक्षित किया गया था।

संरक्षण और संकलन: समय के साथ, कुछ ऋषियों और विद्वानों ने इन भजनों और छंदों को संग्रह में संकलित किया। माना जाता है कि यह प्रक्रिया सदियों से हुई है, जिसमें ऋग्वेद सबसे पुराना है और अन्य वेद बाद में हैं।

दिव्य उत्पत्ति: हिंदू परंपरा मानती है कि वेद अपौरुषेय हैं, जिसका अर्थ मानव मूल का नहीं है, बल्कि सभी प्राणियों के लाभ के लिए मानवता के लिए परमात्मा द्वारा प्रकट किया गया है। यह विश्वास हिंदू धार्मिक और दार्शनिक विचारों में उनकी पवित्रता और अधिकार को रेखांकित करता है।

इस प्रकार, वेदों को कालातीत रहस्योद्घाटन माना जाता है जो आध्यात्मिक सत्य, भजन, अनुष्ठान और दार्शनिक अंतर्दृष्टि को समाहित करते हैं जो आज भी हिंदू विचार और अभ्यास को प्रभावित करते हैं।

3. वेदों में क्या है?

वेद प्राचीन ग्रंथ हैं जो हिंदू धर्म के मूलभूत ग्रंथों का निर्माण करते हैं। वेद ऋषियों को कब दिया गए, यह पूरी तरह अज्ञात है। वेदों के प्रकाशन की सही तारीख भी कोई नहीं जानता। वे वैदिक संस्कृत में रचित हैं और उन्हें चार मुख्य संग्रहों में वर्गीकृत किया गया है:

1. ऋग्वेद -

इस ऋग्वेद से सब पदार्थों की स्तुति होती है अर्थात् ईश्वर ने जिसमें सब पदार्थों के गुणों का प्रकाश किया है, इसलिये विद्वान् लोगों को चाहिये कि ऋग्वेद को प्रथम पढ़के उन मन्त्रों से ईश्वर से लेके पृथिवी-पर्यन्त सब पदार्थों को यथावत् जानके संसार में उपकार के लिये प्रयत्न करें। ऋग्वेद शब्द का अर्थ यह है कि जिससे सब पदार्थों के गुणों और स्वभाव का वर्णन किया जाय वह 'ऋक्' वेद अर्थात् जो यह सत्य सत्य ज्ञान का हेतु है, इन दो शब्दों से 'ऋग्वेद' शब्द बनता है। 'अग्निमीळे' यहां से लेके 'यथा वः सुसहासति' इस अन्त के मन्त्र-पर्यन्त ऋग्वेद में आठ अष्टक और एक एक अष्टक में आठ आठ अध्याय हैं। सब अध्याय मिलके चौसठ होते हैं।

नीचे दिखाए गए वेदों के अनुसार कंपन द्वारा ब्रह्मांड की रचना -



एक एक अध्याय की वर्गसंख्या कोष्ठों में पूर्व लिख दी है। और आठों अष्टक के सब वर्ग 2024 दो हजार चौबीस होते हैं। तथा इस में दश मण्डल हैं। एक एक मण्डल में जितने जितने सूक्त और मन्त्र है सो ऊपर कोष्ठों में लिख दिये हैं। प्रथम मण्डल में 24 चौबीस अनुवाक, और एकसौ इक्कानवे सूक्त, तथा 1976 एक हजार नौ सौ छहत्तर मन्त्र। दूसरे में 4 चार अनुवाक, 43 तितालीस सूक्त, और 429 चार सौ उन्तीस

वेदों में क्या है?

मन्त्र। तीसरे में 5 पांच अनुवाक, 62 बासठ सूक्त, और 617 छः सौ सत्रह मन्त्र। चौथे में 5 पांच अनुवाक 58 अठ्ठावन सूक्त, 589 पांच सौ नवासी मन्त्र।

पांचमें 6 छः अनुवाक 87 सतासी सूक्त, 727 सात सौ सताईस पैसठ मन्त्र। 6 छठे में छः अनुवाक, 75 पचहत्तर सूक्त, 765 सात सौ पैसठ मन्त्र। सातमे में 6 छः अनुवाक, 104 एकसौ चार सूक्त, 841 आठ सौ इकतालीस मन्त्र। आठमे में 10 दश अनुवाक, 103 एकसौ तीन सूक्त, और 1726 एक हजार सातसौ छब्बीस मन्त्र। नवमे में 7 सात अनुवाक 114 एकसौ चौदह सूक्त, 1097 और एक हजार सत्तानवे मन्त्र। और दशम मण्डल में 12 बारह अनुवाक, 191 एकसौ इक्कानवे सूक्त, और 1754 एक हजार सातसौ चौअन मन्त्र हैं। तथा दशों मण्डलों में 85 पचासी अनुवाक, 1028 एक हजार अठ्ठाईस सूक्त, और 10589 दश हजार पांचसौ नवासी मन्त्र हैं।

ऋषि : अग्निः ऋषि

मण्डलः 10

सूक्तः 1028

अध्यायः 64

वर्गः 2024 अष्टकः 8 मण्डल(2): 10 अनुवाकः 85

2. सामवेदः

सामवेद मुख्य रूप से अनुष्ठानों और समारोहों में उपयोग की जाने वाली धुनों (समन) का एक संग्रह है। यह ऋग्वेद से लिया गया है और बलि अनुष्ठानों के दौरान पुजारियों द्वारा गाया जाता है। सामवेद को दो मुख्य भागों में व्यवस्थित किया गया है: "पुरातन" (गण) और "नया" (उक्ता)।

इस वेद में कुल 1875 मन्त्र संग्रहित हैं। उपासना को प्रधानता देने के कारण चारों वेदों में आकार की दृष्टि से लघुतम सामवेद का विशिष्ट महत्व है। श्रीमद्भगवद्गीता स्वविभूतियों का उल्लेख करते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्वयं को वेदों में सामवेद कहकर इसकी महिमा का मण्डन किया है - "वेदानां सामवेदोऽस्मि।(श्रीमद्भगवद्गीता 10/22)- वेदों में मैं सामवेद हूँ।"

- ऋषि : आदित्य ऋषि

- कौथोम शाखा

पूर्वार्चिकः - मन्त्र : 640

महानाम्न्यार्चिकः - मन्त्र : 10

उत्तरार्चिकः - मन्त्र : 1225

वेदों में क्या है?



भगवान के स्वरूप गाकर भगवान की स्तुति करते ऋषि।

- रानायाणीय शाखा

पूर्वार्चिकः - मन्त्र : 640

महानाम्न्यार्चिकः - मन्त्र : 10

उत्तरार्चिकः - मन्त्र : 1225

3. यजुर्वेदः

यजुर्वेद अनुष्ठान और यज्ञ (यज्ञ) करने के लिए निर्देश प्रदान करता है। इसे दो मुख्य शाखाओं में विभाजित किया गया है: शुक्ल (सफेद) यजुर्वेद, जिसमें उनके मूल रूप में छंद शामिल हैं, और कृष्ण (काला) यजुर्वेद, जिसमें स्पष्टीकरण और गद्य सूत्रों (ब्राह्मणों) के साथ छंद शामिल हैं।

जो कर्मकांड है, सो विज्ञान का निमित्त और जो विज्ञानकांड है, सो क्रिया से फल देने वाला होता है। कोई जीव ऐसा नहीं है कि जो मन, प्राण, वायु, इन्द्रिय और शरीर के चलाये बिना एक क्षण भर भी रह सके, क्योंकि जीव अल्पज्ञ एकदेशवर्ती चेतन है। इसलिये जो ईश्वर ने ऋग्वेद के मन्त्रों से सब पदार्थों के गुणगुणी का ज्ञान और यजुर्वेद के मन्त्रों से सब क्रिया करनी प्रसिद्ध की है, क्योंकि (ऋक्) और (यजुः) इन शब्दों का अर्थ भी यही है कि जिससे मनुष्य लोग ईश्वर से लेके पृथिवीपर्यन्त पदार्थों के ज्ञान से धार्मिक विद्वानों

वेदों में क्या है?

का संग, सब शिल्पक्रिया सहित विद्याओं की सिद्धि, श्रेष्ठ विद्या, श्रेष्ठ गुण वा विद्या का दान, यथायोग्य उक्त विद्या के व्यवहार से सर्वोपकार के अनुकूल द्रव्यादि पदार्थों का खर्च करें, इसलिये इसका नाम यजुर्वेद है। और भी इन शब्दों का अभिप्राय भूमिका में प्रकट कर दिया है, वहां देख लेना चाहिये, क्योंकि उक्त भूमिका चारों वेद की एक ही है॥



अंतरिक्ष भी पदार्थ की अवस्था है। यह वैक्यूम नहीं है

इस यजुर्वेद में सब चालीस अध्याय हैं, उन एक-एक अध्याय में कितने-कितने मन्त्र हैं, सो पूर्व संस्कृत में कोष्ठ बनाके सब लिख दिया है और चालीसों अध्याय के सब मिलके १९७५ (उन्नीस्सौ पचहत्तर) मन्त्र हैं॥

ऋषि : वायु ऋषि

अध्याय: 40

मंत्र- १९७५

4. अथर्ववेद:

अथर्ववेद अन्य वेदों से इस मायने में अलग है कि इसमें अनुष्ठानिक भजनों से परे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। इसमें मंत्र, मंत्र और जादुई आकर्षण शामिल हैं जो उपचार, सुरक्षा और रोजमर्रा की चिंताओं को दूर करने के लिए हैं। इसमें ऋग्वेद में पाए जाने वाले भजन के समान भजन भी शामिल हैं।

अथर्ववेद धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधनों की कुन्जी है। जीवन एक सतत संग्राम है। अथर्ववेद जीवन-संग्राम में सफलता प्राप्त करने के उपाय बताता है।

वेदों में क्या है?

अथर्ववेद युद्ध और शान्ति का वेद है। शरीर में शान्ति किस प्रकार रहे, उसके लिए नाना प्रकार की औषधियों का वर्णन इसमें है। परिवार में शान्ति किस प्रकार रह सकती है, उसके लिए भी दिव्य नुस्खे इसमें हैं। राष्ट्र और विश्व में शान्ति किस प्रकार रह सकती है, उन उपायों का वर्णन भी इसमें है।

यदि कोई देश शान्ति को भंग करना चाहे तो उससे किस प्रकार युद्ध करना, शत्रु के आक्रमणों से अपने को किस प्रकार बचाना और उनके कुचक्रों को किस प्रकार समाप्त करना, इत्यादि सभी बातों का विशद वर्णन अथर्ववेद में है।

- ऋषि : अंगिरा ऋषि
- काण्ड: 20
- सूक्त: 731

प्रत्येक वेद में विभिन्न ग्रंथ और परतें होती हैं:

संहिता: ये मुख्य ग्रंथ हैं जिनमें भजन और छंद हैं।

ब्राह्मण: गद्य ग्रंथ जो संहिताओं में वर्णित अनुष्ठानों और अनुष्ठानों की व्याख्या करते हैं।

आरण्यक: ऐसे ग्रंथ जो दार्शनिक व्याख्याएं प्रदान करते हैं और एकांत (जंगल में) में किए गए अनुष्ठानों के लिए अभिप्रेत हैं।

उपनिषद: दार्शनिक ग्रंथ जो आध्यात्मिक ज्ञान और वास्तविकता की प्रकृति पर ध्यान केंद्रित करते हुए अनुष्ठानों और भजनों के गहरे अर्थ का पता लगाते हैं।

संक्षेप में, वेदों में भजन, अनुष्ठान, मंत्र, दार्शनिक अंतर्दृष्टि और आध्यात्मिक ज्ञान शामिल हैं। उन्हें हिंदू धर्म में पवित्र ग्रंथ माना जाता है और इसकी धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं के लिए मूलभूत हैं

4. वेद मंत्र क्या है?

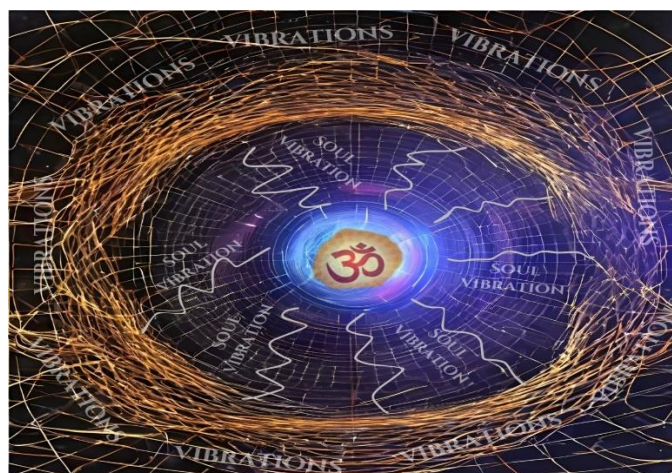
वेदों में, विशेष रूप से ऋग्वेद और उपनिषद (जो बाद में वैदिक ग्रंथ हैं) जैसे ग्रंथों में, दार्शनिक और ब्रह्मांड संबंधी विचार हैं जो सुझाव देते हैं कि ब्रह्मांड ध्वनि या कंपन से प्रकट हुआ है। इस अवधारणा को "शब्द ब्रह्म" या "नाद ब्रह्म" के रूप में जाना जाता है, जहां "ब्रह्म" अंतिम वास्तविकता या ब्रह्मांडीय सिद्धांत को संदर्भित करता है।

इस विचार से संबंधित कुछ प्रमुख बिंदु यहां दिए गए हैं:

ओम (ओम): शब्दांश "ओम" (या "ओम") को मौलिक ध्वनि माना जाता है जिससे हिंदू दर्शन में कुछ व्याख्याओं के अनुसार ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। इसे अक्सर ध्वनि के रूप में वर्णित किया जाता है जो सभी सृष्टि को शामिल करता है और ब्रह्मांड के सार का प्रतिनिधित्व करता है।

ध्वनि और सृजन: वेदों में सृष्टि को ब्रह्मांडीय ध्वनि या "शब्द" के कंपन से उभरने के रूप में वर्णित किया गया है। यह अवधारणा कश्मीर शैव धर्म में "स्पंदा" के विचार के साथ संरेखित होती है, जहां ब्रह्मांड को दिव्य कंपन के साथ स्पंदित के रूप में देखा जाता है।

दार्शनिक व्याख्या: यह विचार कि ब्रह्मांड ध्वनि से उत्पन्न होता है, सृष्टि की शाब्दिक वैज्ञानिक व्याख्या के बजाय अधिक आध्यात्मिक और दार्शनिक है। यह जीवन को बनाने और बनाए रखने के लिए ध्वनि की शक्ति का प्रतीक है और अक्सर वैदिक और बाद के हिंदू ग्रंथों में रूपक या प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या की जाती है। निर्माण अवधारणा के नीचे देखें।



आधुनिक वैज्ञानिक समझ: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, ध्वनि कंपन से ब्रह्मांड के निर्माण का विचार बिग बैंग सिद्धांत जैसे वर्तमान ब्रह्मांड संबंधी सिद्धांतों के साथ संरेखित नहीं होता है, जो मुद्रास्फीति और विस्तार जैसी भौतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास की व्याख्या करता है।

प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक अर्थ: वेदों और संबंधित ग्रंथों में ध्वनि पर जोर हिंदू आध्यात्मिक प्रथाओं में कंपन, प्रतिध्वनि और मंत्र (पवित्र मंत्र) की शक्ति के महत्व को रेखांकित करता है। माना जाता है कि मंत्रों के जाप का चेतना और आध्यात्मिक विकास पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ता है।

संक्षेप में, जबकि वेदों और हिंदू दार्शनिक ग्रंथों में ध्वनि या कंपन से उभरने वाले ब्रह्मांड की अवधारणा का उल्लेख है, इसे वैज्ञानिक सिद्धांत के बजाय एक आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक अर्थ में समझा जाता है। यह अस्तित्व और ब्रह्मांड की प्रकृति के बारे में इन प्राचीन ग्रंथों में पाई जाने वाली गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक अंतर्दृष्टि पर प्रकाश डालता है।

तो वैदिक मंत्र क्या हैं?

देखिए, जैसा कि मैंने पहले कहा था कि हमारे प्राचीन लोगों ने वेदों का ज्ञान हमारे ऋषियों से श्रुति (श्रवण) के माध्यम से प्राप्त किया था। ये सुनने योग्य आवाज़ें थीं जिन्हें हम अपने कानों से आसानी से सुन सकते थे। लेकिन उन ऋषियों के लिए ऐसा नहीं था जिन्होंने भगवान से वैदिक ज्ञान प्राप्त किया था। वह ऋषि शुद्ध आत्मा थे।

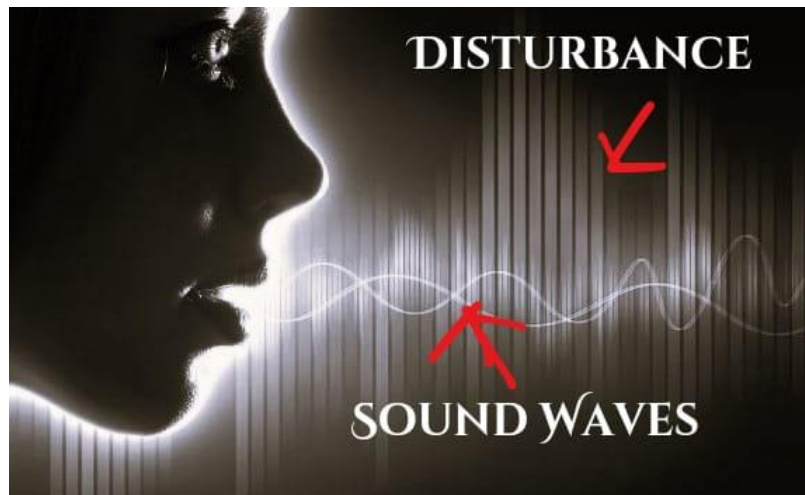
वे अपने मुक्ति (MOKSH) चरण की समाप्ति के बाद पृथ्वी पर पुनर्जन्म ले रहे थे। वे कैसे शुद्ध थे? इससे मोक्ष की अवधारणा को समझने में समय लगेगा। यह हमारी चर्चा का विषय नहीं है। इन ऋषियों ने अपनी उच्चतम ध्यान अवस्था के दौरान ब्रह्मांड में मौजूद इन सूक्ष्म ध्वनियों का अनुभव किया। ये ध्वनियाँ सामान्य सुनने योग्य ध्वनियाँ नहीं हैं जिन्हें मानव निर्मित उपकरण या किसी एम्पलीफायर द्वारा पता लगाया जा सकता है।

वैदिक शास्त्र 4 प्रकार की ध्वनियों के बारे में बात करते हैं। आधुनिक विज्ञान को इसकी जानकारी नहीं है। ये ध्वनियाँ पदार्थ (प्रकृति) में उत्पन्न होती हैं जिसके द्वारा ब्रह्मांड का निर्माण होता है।

- परा ध्वनि (प्राथमिक)
- पश्यन्ति ध्वनि (माध्यमिक)
- मध्यमा ध्वनि (तृतीयक)
- वैखरी ध्वनि (सुनने योग्य ध्वनि)

संदर्भ - वाक्यपदी पुस्तक (भरतरी ऋषि द्वारा)

वेदों में क्या है?



ध्वनि तरंग पदार्थ से भरे अंतरिक्ष को कैसे परेशान करती है

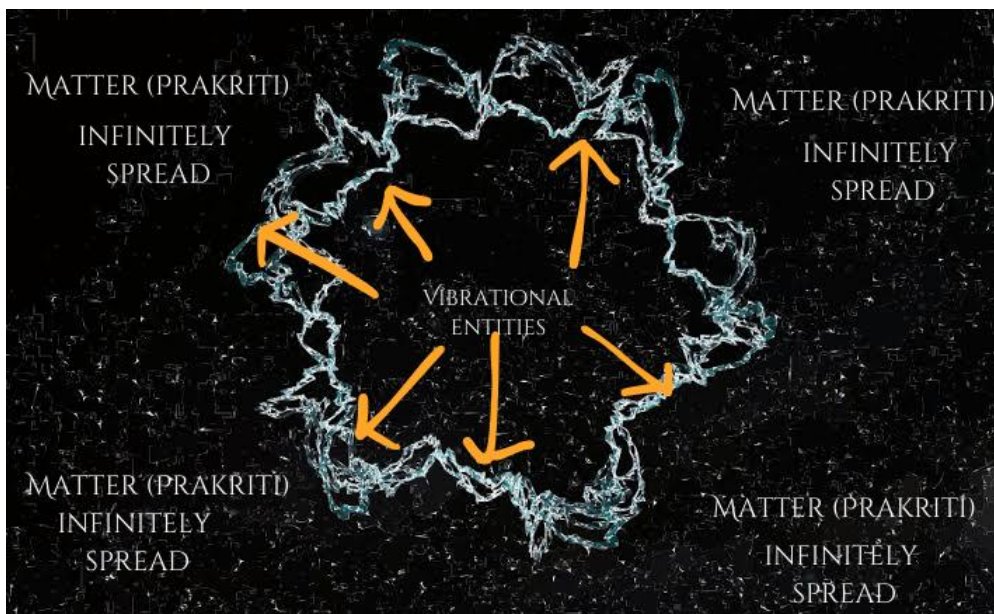
वैदिक मंत्रों को समझने के लिए, हमें प्रकृति में उत्पन्न ध्वनि की प्रकृति को समझने की आवश्यकता है। अब ध्वनि की प्रकृति को समझने के लिए हमें पदार्थ को देखने की आवश्यकता है।

जिस पदार्थ से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना होती है, उसे 'प्रकृति' कहते हैं। PRA का अर्थ है पहले और कृति का अर्थ है क्रिया या कार्रवाई की शुरुआत। यह ब्रह्मांड के निर्माण से पहले पदार्थ की मौलिक स्थिति है जो अद्वितीय, प्राथमिक, समरूप, असीम रूप से हर जगह फैली हुई है। वैदिक विज्ञान के अनुसार खाली जगह या वैक्यूम जैसी कोई चीज नहीं है। आधुनिक विज्ञान सोचता है कि अंतरिक्ष में कोई हवा नहीं है और यह निर्वात है लेकिन वैदिक विज्ञान इसका खंडन करता है और कहता है कि अंतरिक्ष भी किसी चीज से बना पदार्थ है (यजुर्वेद मंत्र द्वारा)।

संदर्भ -

ऋग्वेद 10.129/1.163/10.190/191

जब सर्वोच्च भगवान आत्माओं के लिए ब्रह्मांड बनाना चाहते हैं, तो वह सूक्ष्म ध्वनि बनाकर पदार्थ की मौन, स्थिर, संतुलन स्थिति को तोड़ते हैं। भगवान प्रकृति नामक पदार्थ में सूक्ष्म ध्वनि बनाकर सृष्टि की प्रक्रिया शुरू करते हैं। उस सूक्ष्म ध्वनि को ओम कहा जाता है। प्रकृति में पहले गड़बड़ी के कारण ओम नामक इस पदार्थ के अनंत महासागर में कई तरंगें पैदा करता है और यह प्रक्रिया के प्रज्वलन का पहला चरण है और फिर ध्वनि कंपन और ऊर्जा (एडीआई अग्नि) का संयोजन अणुओं और अन्य पदार्थों को बनाने के लिए निर्माण प्रक्रिया को अगले स्तर तक ले जाता है।



इसलिए, जब यह प्रक्रिया प्रकृति नामक पदार्थ के भीतर की जाती है, तो ध्वनि ओम नए कंपन पैदा करती है जैसे कि जब शांत स्थिर झील के बीच में पत्थर फेंका जाता है तो यह पानी में कई हलकों को बांधता है। यहां भी यही सिद्धांत लागू होता है।

ये तरंगें (गड़बड़ी अधिक तरंगें पैदा करती हैं) अपनी स्थिति को बदलने के लिए पदार्थ में अधिक सूक्ष्म ध्वनि उत्पन्न करती हैं। ये तरंगें जो सूक्ष्म ध्वनि उत्पन्न करती हैं जो किसी एक अवस्था जैसे महातत्व, मानस तत्व आदि द्वारा आच्छादित होती हैं। ये ढकी हुई सूक्ष्म ध्वनियाँ (PARA SOUNDS) वैदिक मंत्रों या छंदों के अलावा और कुछ नहीं हैं।

जैसा कि मैंने कहा कि ये मंत्र स्वतंत्र रूप से कंपन नहीं कर रहे हैं। वे अलग-अलग सेटों में पदार्थ (1 ओम कंपन के बाद पदार्थ की बदली हुई अवस्था और प्रकृति नहीं) द्वारा कवर किए जाते हैं और इन सेट या मोल्ड को छंद कहा जाता है।

ये छन्द राज्य पदार्थ हैं जिनके अपने रंग और विशेषताएँ हैं। वैदिक मंत्रों में कई छन्दों का उल्लेख मिलता है जैसे गायत्री, त्रिष्टुप, अनुष्टुप, जगती, बृहती आदि। अभी, यह हमारी चर्चा का विषय नहीं है लेकिन मुझे इसका उल्लेख करना ज़रूरी था क्योंकि यह मंत्रों से संबंधित है।

मैं वैदिक मंत्रों का एक उदाहरण साझा करने जा रहा हूँ और आप देखेंगे कि कैसे हमारे प्राचीन ऋषियों ने ध्वनियों को शब्दों में परिवर्तित किया और फिर सामान्य लोगों के लिए वैदिक छंदों को समझना आसान बना दिया।

ऋग्वेद - संहिता

॥ अथ प्रथमं मण्डलम् ॥

[सूक्त - १]

[ऋषि- मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । देवता - अग्नि । छन्द-गायत्री]

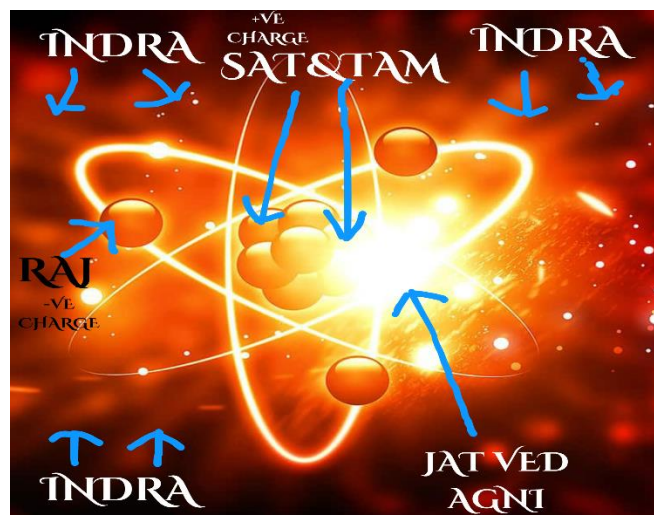
१. ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ १ ॥

हम अग्निदेव की स्तुति करते हैं । (कैसे अग्निदेव ?) जो यज्ञ (श्रेष्ठतम पारमार्थिक कर्म) के पुरोहित (आगे बढ़ाने वाले), देवता (अनुदान देने वाले), ऋत्विज् (समयानुकूल यज्ञ का सम्पादन करने वाले), होता (देवों का आवाहन करने वाले) और याजकों को रत्नों से (यज्ञ के लाभों से) विभूषित करने वाले हैं ॥१॥

दिखाया गया चित्र ऋग्वेद 1.1.1 से है।

ऊपर दिए गए मंत्र में आप देख सकते हैं कि कुल 4 शब्दों का उल्लेख किया गया है, जैसे मंत्र, ऋषि, देवता, छंद। मंत्र सूक्ष्म ध्वनियाँ हैं, जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी। इसमें जिस ऋषि या ऋषि का उल्लेख किया गया है, वह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने पुस्तक में मंत्र लिखा है और वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे भगवान से प्राप्त हुआ है।

ईश्वर मनुष्य की तरह नहीं बोलते हैं, उन्होंने इस वैदिक मंत्र को सूक्ष्म कंपन के रूप में दिया और फिर ऋषियों ने इस छिपे हुए कंपन को डिकोड किया और फिर सामान्य भाषा में परिवर्तित कर दिया ताकि सामान्य मनुष्य वेदों के सार को समझ सकें।



अब बात करते हैं देवता नामक अगले शब्द की। ये वे देवी-देवता नहीं हैं जिनका पालन अधिकांश हिंदू करते हैं। यहाँ में हिंदुओं को अपनी चीज़ों को न जानने के लिए दोषी ठहराऊँगा। देवता के बारे में यह

वेदों में क्या है?

विषय बहुत बड़ा है और मैं इस अवधारणा को संक्षेप में नहीं समझा सकता, लेकिन चूँकि यह मंत्र है, इसलिए मैं देवता का अर्थ क्या है, इसके बारे में थोड़ा विचार करूँगा।

देवता वह चीज़ है जो किसी विशेष गुण से बनाई जाती है। यह जीवित प्राणी या निर्जीव पदार्थ हो सकता है। यह मृत पदार्थ या जीवित इकाई हो सकती है। इन्हें ऐसे स्रोत के रूप में भी लिया जाता है जिसके द्वारा आप कुछ देखते या प्राप्त करते हैं (यह कुछ भी हो सकता है) इसलिए यहाँ हर मंत्र में देवता का उल्लेख है।

यहाँ मंत्र में देवता का अर्थ मंत्र का विषय है। देवता वह है जिसके बारे में मंत्र बात कर रहा है। उपरोक्त मंत्र में देवता अग्नि (अग्नि/ऊर्जा) है। इसलिए, मैं केवल देवता अवधारणा पर एक पूरी किताब लिखूँगा। यहाँ मैं केवल देवता के अर्थ के बारे में मूल विचार दे रहा हूँ।

वैदिक साहित्य में, "देवता" शब्द का अर्थ देवता या दिव्य प्राणी होता है। इन देवताओं को ब्रह्मांडीय शक्तियों या प्राकृतिक घटनाओं की अभिव्यक्ति माना जाता है और वैदिक अनुष्ठानों और भजनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वेद, जो प्राचीन भारतीय शास्त्र हैं, में विभिन्न देवताओं को समर्पित कई भजन हैं, जिनमें से प्रत्येक ब्रह्मांड और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ है।

वैदिक छंदों में देवताओं के बारे में कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

1. विविध अभिव्यक्तियाँ: देवता प्राकृतिक और ब्रह्मांडीय शक्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें अग्नि (अग्नि), वायु (वायु), सूर्य (सूर्य) और वर्षा (इंद्र) शामिल हैं। वे इन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनके आशीर्वाद और सहायता के लिए उनका आह्वान किया जाता है।
 2. अनुष्ठानों में केंद्रीय भूमिका: वैदिक अनुष्ठानों में अक्सर देवताओं का आह्वान और पूजा शामिल होती है। उनका अनुग्रह, सुरक्षा और समर्थन प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रसाद, मंत्र और भजन समर्पित किए जाते हैं।
 3. पदानुक्रम और कार्य: देवताओं के बीच एक पदानुक्रमिक संरचना है, जिसमें कुछ अन्य की तुलना में अधिक प्रमुख हैं और अक्सर उनका आह्वान किया जाता है। उदाहरण के लिए, देवताओं के राजा इंद्र, कई वैदिक भजनों में एक प्रमुख व्यक्ति हैं, विशेष रूप से ऋग्वेद में।
 4. प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व: देवता मानवीय अनुभव और आध्यात्मिकता के विभिन्न पहलुओं का भी प्रतीक हैं। उदाहरण के लिए, अग्नि देवता न केवल भौतिक अग्नि का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि अनुष्ठान की पवित्र अग्नि, शरीर के भीतर पाचन अग्नि और चेतना के दिव्य प्रकाश का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।
- वैदिक साहित्य में, "छन्द" (छन्दः) वैदिक मंत्रों और भजनों की छन्द या लयबद्ध संरचना को संदर्भित करता है। छन्द वैदिक ग्रंथों की रचना और पाठ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह सुनिश्चित करता है कि छंद सटीक और मधुर तरीके से प्रस्तुत किए जाएं। छन्द के बारे में कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. परिभाषा और महत्व: छंद एक छंदात्मक ढांचा है जो वैदिक मंत्र में अक्षरों की व्यवस्था को नियंत्रित करता है। यह सुनिश्चित करता है कि छंदों में एक विशिष्ट लयबद्ध पैटर्न हो, जो वैदिक भजनों के उचित उच्चारण, याद रखने और संप्रेषण के लिए आवश्यक है।
2. छंदों के प्रकार: वेदों में कई प्रकार के छंदों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक का अपना विशिष्ट अक्षर पैटर्न होता है। कुछ सबसे आम वैदिक छंदों में शामिल हैं:
 - गायत्री: तीन पंक्तियों (पदों) में प्रत्येक में आठ अक्षर होते हैं, कुल 24 अक्षर होते हैं।
 - अनुष्टुभः: चार पंक्तियों (पदों) में प्रत्येक में आठ अक्षर होते हैं, कुल 32 अक्षर होते हैं।
 - त्रिष्टुभः: चार पंक्तियों (पदों) में प्रत्येक में ग्यारह अक्षर होते हैं, कुल 44 अक्षर होते हैं।
 - जगती: चार पंक्तियों (पदों) में प्रत्येक में बारह अक्षर होते हैं, कुल 48 अक्षर होते हैं।
3. पाठ में महत्व: वैदिक मंत्रों के उचित पाठ के लिए छंदों का सही उपयोग महत्वपूर्ण है। लयबद्ध पैटर्न मंत्रों की ध्वन्यात्मक अखंडता को बनाए रखने में मदद करता है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह उनकी प्रभावकारिता और आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाता है।
4. वैदिक अनुष्ठानों में भूमिका: छन्द न केवल वैदिक मंत्रों की सौंदर्य और संगीत गुणवत्ता में योगदान देता है, बल्कि वैदिक अनुष्ठानों में एक कार्यात्मक भूमिका भी निभाता है। सटीक मीटर यह सुनिश्चित करता है कि मंत्रों का उच्चारण सही ढंग से किया जाए, जो अनुष्ठान की सफलता के लिए आवश्यक है।
5. अध्ययन और विश्लेषण: छन्दों का अध्ययन, जिसे छन्द शास्त्र के नाम से जाना जाता है, वैदिक अध्ययन की एक महत्वपूर्ण शाखा है। पिंगला जैसे प्राचीन विद्वानों ने छन्दों पर ग्रंथ लिखे, जिनमें वैदिक साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न छन्दों का विश्लेषण और संहिताकरण किया गया।

संक्षेप में, वैदिक मंत्रों में छंद छंद संरचना को संदर्भित करता है जो छंदों के लयबद्ध पैटर्न को निर्धारित करता है। यह वैदिक रचना और पाठ का एक मूलभूत पहलू है, जो यह सुनिश्चित करता है कि मंत्रों का उच्चारण सटीकता और सामंजस्य के साथ किया जाए।

गायत्री छंद (या गायत्री छंद) वैदिक साहित्य में सबसे अधिक पूजनीय और अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले छंदों में से एक है। गायत्री छंद के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

संरचना: गायत्री छंद में तीन पंक्तियाँ (पद) होती हैं, जिनमें से प्रत्येक में आठ अक्षर होते हैं, जिससे कुल 24 अक्षर बनते हैं। यह 8-8-8 अक्षर पैटर्न विशिष्ट है और मंत्र का लयबद्ध ढांचा बनाता है।

वैदिक ग्रंथों में प्रमुखता: गायत्री छंद वैदिक भजनों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से ऋग्वेद में, जहाँ इसका उपयोग कई छंदों की रचना के लिए किया गया है। गायत्री छंद में मंत्र का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण गायत्री मंत्र ही है, जो सौर देवता सविता को समर्पित है।

गायत्री मंत्र: गायत्री मंत्र हिंदू धर्म में सबसे पवित्र और शक्तिशाली मंत्रों में से एक है। यह इस प्रकार है:

- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

हम सविता (सूर्य) के दिव्य प्रकाश का ध्यान करते हैं। वह उज्ज्वल प्रकाश हमारी बुद्धि को प्रेरित करे।
आध्यात्मिक महत्व: गायत्री छंद केवल एक छंदात्मक संरचना नहीं है, बल्कि इसका गहरा आध्यात्मिक महत्व भी है। इस छंद में रचित गायत्री मंत्र मन को शुद्ध करता है, आध्यात्मिक विकास को बढ़ाता है और साधक को दिव्य प्रकाश और ज्ञान से जोड़ता है।

अनुष्ठानों और अभ्यासों में उपयोग: गायत्री मंत्र का जाप पारंपरिक रूप से कई हिंदुओं द्वारा दैनिक संध्यावंदन (सुबह, दोपहर और शाम को की जाने वाली अनुष्ठानिक प्रार्थना) के दौरान किया जाता है। इसे विभिन्न वैदिक अनुष्ठानों और समारोहों के दौरान भी सुनाया जाता है, जो आध्यात्मिक अभ्यास में इसकी केंद्रीय भूमिका को उजागर करता है।

प्रतीकात्मकता: गायत्री छंद की तीन पंक्तियों की अक्सर प्रतीकात्मक रूप से विभिन्न त्रय, जैसे तीन लोक (भूर, भुवः, स्वः), दिन के तीन समय (सुबह, दोपहर, शाम) और दिव्य के तीन पहलुओं (सृजन, संरक्षण, विनाश) का प्रतिनिधित्व करने के लिए व्याख्या की जाती है।

संक्षेप में, गायत्री छन्द 24 अक्षरों (8-8-8) का एक छंदात्मक पैटर्न है और गायत्री मंत्र में इसके प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है, जिसका गहन आध्यात्मिक महत्व है और यह कई वैदिक अनुष्ठानों और दैनिक प्रथाओं का केंद्र है।

अनुष्टुभ छंद (या अनुष्टुभ मीटर) वैदिक साहित्य और शास्त्रीय संस्कृत काव्य में सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले छंदों में से एक है। अनुष्टुभ छंद के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

संरचना: अनुष्टुभ छंद में चार पंक्तियाँ (पद) होती हैं, जिनमें से प्रत्येक में आठ शब्दांश होते हैं, जिससे प्रत्येक छंद में कुल 32 शब्दांश होते हैं। पैटर्न 8-8-8-8 शब्दांश है।

वैदिक ग्रंथों में प्रमुखता: अनुष्टुभ छंद का व्यापक रूप से ऋग्वेद, महाभारत, रामायण और कई अन्य शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथों में उपयोग किया जाता है। यह इन ग्रंथों में श्लोकों (छंदों) की रचना के लिए सबसे प्रचलित छंद है।

उदाहरण:

भगवद गीता के कई श्लोक अनुष्टुभ छंद में रचे गए हैं। उदाहरण के लिए:

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥ (Bhagavad Gita 1.1)

हे संजय, कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि में एकत्रित होकर युद्ध की इच्छा रखते हुए, मेरे पुत्रों और पांडु के पुत्रों ने क्या किया?

वेदों में क्या है?

1. आध्यात्मिक और साहित्यिक महत्व: अनुष्टुभ छंद बहुमुखी और सुनाने में आसान है, जो इसे दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं से लेकर महाकाव्य कथाओं तक विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला को व्यक्त करने के लिए आदर्श बनाता है। इसकी संतुलित संरचना स्पष्ट और लयबद्ध अभिव्यक्ति की अनुमति देती है।

2. अनुष्ठानों और प्रथाओं में उपयोग: अनुष्टुभ छंद में रचित छंद विभिन्न वैदिक अनुष्ठानों, धार्मिक समारोहों और दैनिक प्रार्थनाओं के दौरान सुनाए जाते हैं। इसकी सरलता और लय याद रखने और मौखिक संचार में सहायता करती है, जो वैदिक परंपरा में महत्वपूर्ण थे।

3. प्रतीकात्मकता: अनुष्टुभ छंद अक्सर अपनी समान शब्दांश संरचना के कारण संतुलन और सामंजस्य से जुड़ा होता है। इसे वैदिक और संस्कृत काव्य में एक स्थिर और आधारभूत छंद माना जाता है

संक्षेप में, अनुष्टुभ छंद 32 अक्षरों (8-8-8-8) का एक छंदात्मक पैटर्न है, जिसका व्यापक रूप से वैदिक साहित्य और शास्त्रीय संस्कृत काव्य में उपयोग किया जाता है। इसकी संतुलित संरचना इसे विभिन्न साहित्यिक और आध्यात्मिक रचनाओं के लिए आदर्श बनाती है, जो वैदिक ज्ञान और शिक्षाओं के प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आध्यात्मिक और साहित्यिक महत्व: अनुष्टुभ छंद बहुमुखी और सुनाने में आसान है, जो इसे दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षाओं से लेकर महाकाव्य कथाओं तक, विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला को व्यक्त करने के लिए आदर्श बनाता है। इसकी संतुलित संरचना स्पष्ट और लयबद्ध अभिव्यक्ति की अनुमति देती है। अनुष्ठानों और प्रथाओं में उपयोग: अनुष्टुभ छंद में रचित छंद विभिन्न वैदिक अनुष्ठानों, धार्मिक समारोहों और दैनिक प्रार्थनाओं के दौरान सुनाए जाते हैं।

इसकी सरलता और लय याद रखने और मौखिक संचरण में सहायता करती है, जो वैदिक परंपरा में महत्वपूर्ण थे। प्रतीकात्मकता: अनुष्टुभ छंद अक्सर अपनी समान शब्दांश संरचना के कारण संतुलन और सामंजस्य से जुड़ा होता है। इसे वैदिक और संस्कृत काव्य में एक स्थिर और आधारभूत छंद माना जाता है। संक्षेप में, अनुष्टुभ छंद 32 अक्षरों (8-8-8-8) का एक छंद पैटर्न है, जिसका व्यापक रूप से वैदिक साहित्य और शास्त्रीय संस्कृत काव्य में उपयोग किया जाता है। इसकी संतुलित संरचना इसे विभिन्न साहित्यिक और आध्यात्मिक रचनाओं के लिए आदर्श बनाती है, जो वैदिक ज्ञान और शिक्षाओं के संचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

त्रिष्टुभ छंद (या त्रिष्टुभ मीटर) वैदिक साहित्य में प्रयुक्त एक अन्य महत्वपूर्ण छंदात्मक पैटर्न है। त्रिष्टुभ छंद के बारे में मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

संरचना: त्रिष्टुभ मीटर में चार पंक्तियाँ (पद) होती हैं, जिनमें से प्रत्येक में ग्यारह शब्दांश होते हैं, जो प्रति छंद कुल 44 शब्दांश बनाते हैं। पैटर्न 11-11-11-11 शब्दांश है।

वैदिक ग्रंथों में प्रमुखता: त्रिष्टुभ मीटर ऋग्वेद में अनुष्टुभ मीटर के बाद दूसरा सबसे आम मीटर है। इसका उपयोग अक्सर विभिन्न देवताओं को समर्पित भजनों और मंत्रों की रचना में किया जाता है।

उदाहरण: ऋग्वेद में कई भजन त्रिष्टुभ मीटर में रचित हैं। उदाहरण के लिए:

उन्होंने यज्ञ करने वाले इंद्र, अप्सुरस और सत्रिस को बढ़ाया।

क्योंकि हम तुम्हें वज्र, वृत्र का नाशक और तुविकुर्मि जानते हैं। (ऋग्वेद 1.10.1)

इन्द्र की शक्ति को बढ़ाते हुए, सक्रिय पुरुष, उनके भजन प्रस्तुत करने के लिए तत्पर हैं। हम जानते हैं कि हे वज्रधारी, हे वृत्र का वध करने वाले, आप पराक्रमी हैं।

महत्व और उपयोग: त्रिष्टुभ मीटर को अनुष्टुभ मीटर की तुलना में इसकी अधिक जटिल और मजबूत संरचना के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग अक्सर अधिक विस्तृत और गंभीर भजनों के लिए किया जाता है, जो भव्यता और शक्ति की भावना व्यक्त करते हैं। यह मीटर देवताओं के आह्वान और स्तुति के लिए उपयुक्त है, विशेष रूप से वे जो शक्ति और सुरक्षा से जुड़े हैं, जैसे इंद्र।

अनुष्ठानों और प्रथाओं में भूमिका: त्रिष्टुभ मीटर में छंद विभिन्न वैदिक अनुष्ठानों और समारोहों के दौरान गाए जाते हैं। इस मीटर की लयबद्ध और शक्तिशाली संरचना पाठ की गंभीरता और प्रभावशीलता को बढ़ाती है।

प्रतीकात्मकता: त्रिष्टुभ मीटर की लंबी और अधिक जटिल पंक्तियों को गहराई और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। यह इसे उन भजनों के लिए उपयुक्त बनाता है जिनका उद्देश्य श्रद्धा और विस्मय की भावना जगाना है।

संक्षेप में, त्रिष्टुभ छंद 44 अक्षरों (11-11-11-11) का एक छंदात्मक पैटर्न है, जिसका उपयोग ऋग्वेद में शक्तिशाली देवताओं को समर्पित भजनों और मंत्रों के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इसकी जटिल

और लयबद्ध संरचना इसे गंभीर और भव्य आह्वान के लिए आदर्श बनाती है, जो वैदिक अनुष्ठानों और आध्यात्मिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जगती छंद (या जगती मीटर) वैदिक साहित्य में प्रयुक्त एक अन्य महत्वपूर्ण छंदात्मक पैटर्न है। जगती छंद के बारे में मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

संरचना: जगती मीटर में चार पंक्तियाँ (पद) होती हैं, जिनमें से प्रत्येक में बारह शब्दांश होते हैं, जो प्रति छंद कुल 48 शब्दांश बनाते हैं। पैटर्न 12-12-12-12 शब्दांश है।

वैदिक ग्रंथों में प्रमुखता: जगती मीटर ऋग्वेद और अन्य वैदिक ग्रंथों में पाए जाने वाले प्राथमिक मीटरों में से एक है। इसका उपयोग विभिन्न देवताओं को समर्पित भजन और मंत्रों की रचना के लिए किया जाता है।

उदाहरण: ऋग्वेद में कई भजन जगती मीटर में रचे गए हैं। उदाहरण के लिए:

असाव्यसौ यः प्रथमः सुमङ्गल्यः स्वधिता यः प्रथमो विश्वस्य। तमीशानं जगतो विष्णुमीड्यं यज्ञैः पूर्वैरिषितारं हवींषि॥ (Rigveda 1.156.5)

ये जो सर्वोपरि, शुभ, स्वयंभू, समस्त ब्रह्माण्डों में प्रथम हैं। ये जगत के स्वामी विष्णु हैं, जिनकी स्तुति करनी चाहिए, प्राचीन यज्ञों से उनका सम्मान करना चाहिए।

महत्व और उपयोग: जगती मीटर को अन्य मीटर जैसे अनुष्टुभ और त्रिष्टुभ की तुलना में अपनी लंबी और अधिक विस्तृत संरचना के लिए जाना जाता है। यह इसे अधिक विस्तृत और भव्य भजनों के लिए उपयुक्त बनाता है, जिसके लिए लंबे लयबद्ध प्रवाह की आवश्यकता होती है।

अनुष्ठानों और प्रथाओं में भूमिका: जगती मीटर में छंद विभिन्न वैदिक अनुष्ठानों और समारोहों के दौरान गाए जाते हैं। इस मीटर की विस्तारित और लयबद्ध संरचना पाठ के औपचारिक पहलू और गंभीरता को बढ़ाती है।

प्रतीकात्मकता: जगती मीटर की लंबी पंक्तियों को अक्सर विस्तार और भव्यता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। यह इसे उन भजनों के लिए उपयुक्त बनाता है जिनका उद्देश्य विशालता और महिमा की भावना व्यक्त करना है, जो अक्सर विष्णु और वैदिक देवताओं में अन्य महत्वपूर्ण देवताओं जैसे ब्रह्मांडीय देवताओं से जुड़े होते हैं।

संक्षेप में, जगती छंद 48 अक्षरों (12-12-12-12) का एक छंद पैटर्न है, जिसका व्यापक रूप से ऋग्वेद में प्रमुख देवताओं को समर्पित भजनों और मंत्रों के लिए उपयोग किया जाता है। इसकी विस्तृत और लयबद्ध संरचना इसे विस्तृत और भव्य आह्वान के लिए आदर्श बनाती है, तथा वैदिक अनुष्ठानों और आध्यात्मिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वैदिक साहित्य में, "ऋषि" (ऋषि) शब्द का अर्थ ऐसे ऋषि या द्रष्टा से है, जिन्हें गहन ध्यान और आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ माना जाता है। ऋषि हिंदू धर्म में अत्यधिक पूजनीय व्यक्ति हैं, जिन्हें वैदिक भजनों और मंत्रों की रचना करने का श्रेय दिया जाता है। वैदिक मंत्रों के संदर्भ में ऋषियों के प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

1. दिव्य ज्ञान के प्राप्तकर्ता: माना जाता है कि ऋषियों को ईश्वर से प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि या रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ था। ये रहस्योद्घाटन वैदिक भजनों और मंत्रों के रूप में आए, जिन्हें उन्होंने मौखिक रूप से रचा और प्रसारित किया।

2. वैदिक भजनों के लेखक: वेदों में भजनों का श्रेय विभिन्न ऋषियों को दिया जाता है। प्रत्येक भजन अक्सर उस ऋषि के संदर्भ से शुरू होता है, जिसे भजन दिया जाता है। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद के कई भजनों में उन ऋषियों के नामों का उल्लेख है जिन्होंने उन्हें रचा था, जैसे विश्वामित्र, वशिष्ठ और अत्रि। 3. ऋषियों की विभिन्न श्रेणियाँ: ऋषियों की विभिन्न श्रेणियाँ हैं, जैसे:

o सप्तऋषि: सात महान ऋषि, जिन्हें वैदिक परंपरा का पितामह माना जाता है। उनके नाम अक्सर भृगु, अत्रि, अंगिरस, वशिष्ठ, पुलस्त्य, पुलहा और क्रतु के रूप में उल्लेखित हैं।

o महर्षि: महान ऋषि जिनके पास गहन ज्ञान और बुद्धि है।

o ब्रह्मर्षि: ऋषि जिन्होंने सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया है और जिन्हें सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के बराबर माना जाता है।

4. वैदिक अनुष्ठानों में भूमिका: वैदिक अनुष्ठानों में, ऋषियों का आह्वान आम है। वे अपनी बुद्धि और वैदिक ज्ञान को संरक्षित करने और प्रसारित करने में उनकी भूमिका के लिए पूजनीय हैं। उन्हें सम्मानित करने के लिए अक्सर प्रार्थना और प्रसाद चढ़ाया जाता है।

5. आध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शक: ऋषि न केवल भजनों के रचयिता हैं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शक भी हैं। उनकी शिक्षाएँ और कहानियाँ वेदों, उपनिषदों और पुराणों सहित विभिन्न हिंदू धर्मग्रंथों

वेदों में क्या है?

में संरक्षित हैं। उन्हें अक्सर आदर्श गुणों को अपनाने वाले और तपस्या और भक्ति का अनुकरणीय जीवन जीने वाले के रूप में दर्शाया जाता है।

6. मंत्र और ध्यान: ऋषियों को विशिष्ट मंत्रों और ध्यान संबंधी प्रथाओं से जोड़ा जाता है। कुछ मंत्रों का नाम उन ऋषियों के नाम पर रखा गया है जिन्होंने उन्हें रचा था, और अभ्यासी ध्यान या पाठ प्रक्रिया के हिस्से के रूप में ऋषि के नाम का आह्वान कर सकते हैं।

संक्षेप में, वैदिक मंत्रों में ऋषि पूजनीय ऋषि हैं जिन्होंने दिव्य ज्ञान प्राप्त किया और वेदों के भजन और मंत्रों की रचना की। उन्हें आध्यात्मिक मार्गदर्शक माना जाता है और पवित्र ज्ञान को संरक्षित करने और प्रसारित करने में उनकी भूमिका के लिए उन्हें सम्मानित किया जाता है।

5. ऋषियों को वेद कैसे प्राप्त हुए?

माना जाता है कि वेद, जो हिंदू धर्म के सबसे पुराने और सबसे पूजनीय ग्रंथ हैं, ऋषियों (ऋषियों) को दिव्य प्रेरणा और गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के माध्यम से प्रकट हुए थे। जिस प्रक्रिया से ऋषियों ने वेद प्राप्त किए, उसे परंपरा के भीतर एक रहस्यमय और पारलौकिक अनुभव के रूप में समझा जाता है। यहाँ ऋषियों को वेद कैसे प्राप्त हुए, इसके मुख्य पहलू दिए गए हैं:

1. दिव्य रहस्योद्घाटन (श्रुति): वेदों को "श्रुति" माना जाता है, जिसका अर्थ है "वह जो सुना जाता है।" ऐसा माना जाता है कि ऋषियों ने बौद्धिक प्रयास से वेदों की रचना नहीं की, बल्कि उन्हें दिव्य रहस्योद्घाटन के माध्यम से "सुना" था। यह ज्ञान उन्हें सर्वोच्च ब्रह्मांडीय वास्तविकता, ब्रह्म द्वारा ध्यान और आध्यात्मिक संवाद की गहरी अवस्थाओं के दौरान प्रकट किया गया था।

2. गहन ध्यान और आध्यात्मिक अभ्यास: ऋषियों ने कठोर ध्यान, तप और आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से वैदिक भजनों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक मन की स्थिति प्राप्त की। अपने मन और इंद्रियों को शुद्ध करके, वे उच्च ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ने और वेदों के शाश्वत सत्य को प्राप्त करने में सक्षम थे।

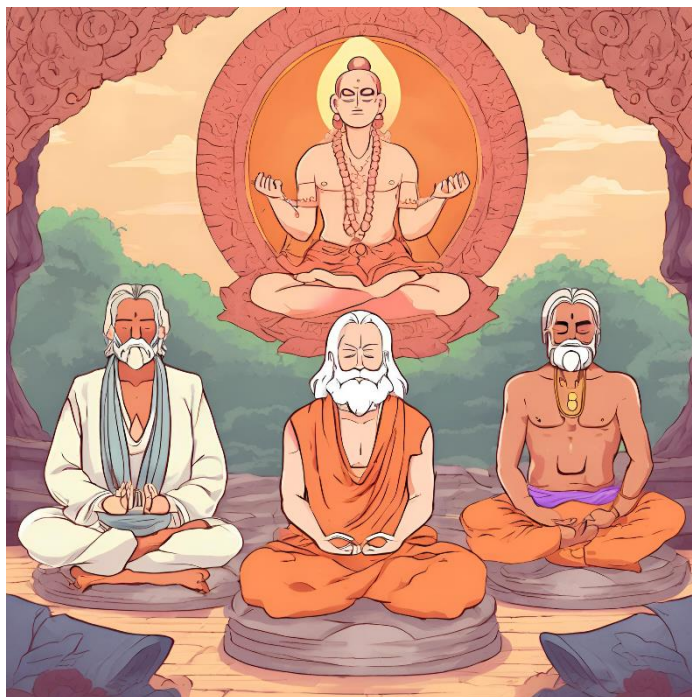
3. आंतरिक दृष्टि (दर्शन): ऐसा माना जाता है कि ऋषियों को वैदिक भजनों की आंतरिक दृष्टि या प्रत्यक्ष अनुभूति (दर्शन) थी। यह आंतरिक दृष्टि सामान्य संवेदी धारणा से परे थी और ऋषियों को वेदों में सन्निहित सार्वभौमिक सत्य और ब्रह्मांडीय सिद्धांतों तक पहुँचने की अनुमति देती थी।

4. संचरण और मौखिक परंपरा: एक बार जब ऋषियों को वेदों का पता चला, तो उन्होंने इस ज्ञान को मौखिक रूप से अपने शिष्यों को प्रेषित किया। इस मौखिक संचरण की विशेषता सावधानीपूर्वक याद रखना और सटीक पाठ करना था, जिससे पीढ़ियों तक वैदिक ग्रंथों का संरक्षण सुनिश्चित हुआ। वेदों को आगे बढ़ाने की मौखिक परंपरा को सटीक उच्चारण और स्वर को संरक्षित करने के लिए बहुत सावधानी से बनाए रखा गया था।

5. अनेक ऋषि और सार्वभौमिक ज्ञान: वेद कई ऋषियों के भजनों का संग्रह हैं। वेदों के विभिन्न भजन और खंड अलग-अलग ऋषियों से जुड़े हैं, जो यह संकेत देते हैं कि दिव्य ज्ञान ऋषियों के एक विविध समूह को प्रकट किया गया था। यह वैदिक ज्ञान की सार्वभौमिकता पर जोर देता है, जो किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि उन लोगों के लिए सुलभ था जिन्होंने अपेक्षित आध्यात्मिक शुद्धता और अंतर्दृष्टि प्राप्त की थी।

6. प्रतीकवाद और पौराणिक कथाएँ: हिंदू पौराणिक कथाओं और ग्रंथों में अक्सर प्रतीकात्मक और काव्यात्मक शब्दों में ऋषियों को वेदों के प्रकट होने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। ऋषियों की दिव्य प्राणियों से मुलाकात, उनकी गहन ध्यान अवस्थाएँ और उनकी तप साधना के बारे में कहानियाँ और किंवदंतियाँ इस बात की समझ को समृद्ध करती हैं कि वेदों को कैसे प्राप्त किया गया था।

संक्षेप में, ऋषियों ने गहन ध्यान और आध्यात्मिक अभ्यासों के दौरान दिव्य रहस्योद्घाटन के माध्यम से वेदों को प्राप्त किया। शाश्वत और सार्वभौमिक माने जाने वाले इस ज्ञान को बहुत सटीकता और श्रद्धा के साथ मौखिक रूप से प्रसारित किया गया, जिसने वैदिक परंपरा और हिंदू दर्शन की नींव रखी।



हिंदू धर्म में वेदों को "श्रुति" माना जाता है, जिसका अर्थ है "जो सुना जाता है।" यह पदनाम वेदों और उनके प्रसारण के कई प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डालता है:

1. दिव्य रहस्योद्घाटन: "श्रुति" शब्द का अर्थ है कि वेदों की रचना मनुष्यों द्वारा नहीं की गई थी, बल्कि उन्हें दिव्य प्रेरणा के माध्यम से ऋषियों (ऋषियों) को प्रकट किया गया था। ऐसा माना जाता है कि ऋषियों ने गहन ध्यान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की अवस्थाओं के दौरान सर्वोच्च ब्रह्मांडीय वास्तविकता, ब्रह्म से सीधे यह ज्ञान प्राप्त किया था। इस प्रकार वेदों को शाश्वत सत्य माना जाता है जिन्हें ऋषियों ने "सुना" या अनुभव किया था।

2. शाश्वत और कालातीत ज्ञान: श्रुति के रूप में, वेदों को शाश्वत और कालातीत माना जाता है। उन्हें हिंदू धर्म के मूलभूत ग्रंथों के रूप में देखा जाता है, जिसमें सार्वभौमिक सत्य और ब्रह्मांडीय सिद्धांत शामिल हैं जो परिवर्तन के अधीन नहीं हैं। यह "स्मृति" के विपरीत है, जो उन ग्रंथों को संदर्भित करता है जिन्हें परंपरा के माध्यम से याद किया जाता है और पारित किया जाता है, अक्सर मानव लेखकों द्वारा लिखा जाता है और व्याख्या और परिवर्तन के अधीन होता है।

3. मौखिक परंपरा: वेदों को श्रुति के रूप में नामित करना भी उनके संचरण की विधि को रेखांकित करता है। वेदों को शुरू में पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से पारित किया गया था। इस मौखिक परंपरा में सावधानीपूर्वक याद रखना और सटीक पाठ करना शामिल था, जिससे यह सुनिश्चित होता था कि ग्रंथों को ठीक उसी तरह संरक्षित किया जाए जैसा कि मूल ऋषियों ने "सुना" था। वेदों की मौखिक परंपरा में ग्रंथों की शुद्धता और सटीकता बनाए रखने के लिए विशिष्ट जप तकनीक और स्मृति सहायक उपकरण शामिल हैं।

4. पवित्र अधिकार: श्रुति ग्रंथों को हिंदू धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं में सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है। उन्हें ज्ञान का अंतिम स्रोत और धर्म (नैतिक और नैतिक कर्तव्य), ब्रह्मांड विज्ञान, अनुष्ठान और आध्यात्मिक प्रथाओं को समझने के लिए प्राथमिक संदर्भ माना जाता है। वेदों को, श्रुति के रूप में, उस आधार के रूप में देखा जाता है जिस पर बाद के ग्रंथ, जैसे उपनिषद, स्मृति और पुराण, निर्मित होते हैं।

6. आध्यात्मिक अभ्यास और ध्यान: जिस प्रक्रिया से ऋषियों ने वेदों को प्राप्त किया, उसे गहन ध्यान, तप और आंतरिक शुद्धि से जुड़ी एक गहन आध्यात्मिक प्रथा के रूप में देखा जाता है। श्रुति शब्द इस रहस्योद्घाटन की आध्यात्मिक और रहस्यमय प्रकृति पर जोर देता है, जो इसे ज्ञान प्राप्ति के सामान्य रूपों से अलग करता है।

संक्षेप में, वेदों को "श्रुति" माना जाता है क्योंकि माना जाता है कि वे ईश्वरीय रूप से प्रकट हुए, शाश्वत हैं, और मौखिक परंपरा के माध्यम से प्रसारित होते हैं जो उनके सटीक संरक्षण को सुनिश्चित करता है। यह पदनाम हिंदू धर्म में उनके सर्वोच्च अधिकार और आधारभूत भूमिका के साथ-साथ उनके रहस्योद्घाटन की आध्यात्मिक और रहस्यमय प्रकृति को भी उजागर करता है।

वे ऋषि कौन थे जिन्हें वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ?

जैसा कि हमने चर्चा की कि वैदिक छंद सूक्ष्म ध्वनियाँ हैं जो प्रकृति नामक कच्चे पदार्थ में उत्पन्न होती हैं और फिर पदार्थ की अगली अवस्था जिसे छन्द कहते हैं, द्वारा आच्छादित होती हैं। लेकिन हमें अभी इस बात पर चर्चा करनी है कि इस ज्ञान को प्राप्त करने वाले प्राचीन ऋषियों की प्रकृति क्या थी।

देखिए, जन्म लेने वाला हर जीव कुछ कर्म-आधारित नियति के साथ जन्म लेता है जिसे प्रारब्ध कहते हैं। यह कर्म हमारा पिछला जन्म या वर्तमान जन्म हो सकता है और यह हर जीव में अलग-अलग होता है। अगर आप एक निश्चित स्तर की बुद्धि के साथ पैदा हुए हैं, तो यह आपके पिछले जन्म के कर्मों के कारण है। अगर आप जन्म से अमीर या गरीब या अंधे या स्वस्थ या कुछ भी पैदा हुए हैं, तो यह आपके पिछले जन्म के कर्मों के कारण है।

बिना कर्म के किसी को भी फल नहीं मिलता। इसलिए, अगर जन्म से ही आपको उच्च स्तर की बुद्धि दी गई है, तो भविष्य में आपके वैज्ञानिक, शोधकर्ता, शिक्षक आदि बनने की संभावना अधिक है। मैं सामान्य मनुष्य के बारे में चर्चा कर रहा था। लेकिन इस पुस्तक में, हम दिव्य वैदिक रहस्योद्घाटन के बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए, भगवान जानते हैं कि यह ज्ञान किसे दिया जाना चाहिए।

यह वैदिक ज्ञान सामान्य मनुष्यों द्वारा समझना आसान नहीं है, इसके लिए व्यक्ति को अत्यधिक सहज, उच्च बुद्धि स्तर का होना आवश्यक है। जिन ऋषियों ने यह ज्ञान प्राप्त किया, वे अत्यंत श्रेष्ठ थे और उन्हें उनके पिछले जन्म के कर्मों के कारण चुना गया था। उनकी आत्मा शुद्ध थी और वे युवा थे, लेकिन उनके दिल से मासूम थे, ठीक वैसे ही जैसे बच्चों का दिल भ्रष्टाचार, लालच, धोखाधड़ी, मूर्खता आदि से मुक्त होता है।

इसलिए शुद्ध आत्मा ने अपनी अंतर्ज्ञान शक्ति के माध्यम से इस दिव्य संकेत को आकर्षित किया। वे इस पर ध्यान करने के लिए अपनी आंतरिक पुकार से मजबूर थे। ये ऋषि शुद्ध आत्मा थे और उनका पिछला जीवन मुक्ति की अवस्था में था जिसे मोक्ष भी कहा जाता है। इसलिए, मोक्ष की अवस्था समाप्त होने के बाद उनका नया जीवन फिर से शुरू हुआ और उन्होंने पृथ्वी पर पुनर्जन्म लिया। इसलिए, ये शुद्ध आत्माएँ अपनी आंतरिक पुकार की ओर आकर्षित हुईं और यह आंतरिक पुकार उनका प्रारब्ध था जिसके बारे में मैंने पहले बताया था।

यह उन ऋषियों की स्थिति के बारे में था जिन्हें यह दिव्य वैदिक ज्ञान सूक्ष्म ध्वनियों के माध्यम से प्राप्त हुआ था जिन्हें मंत्र कहा जाता है। लेकिन यहाँ सवाल यह उठता है कि अगर मंत्र छन्दों से ढकी सूक्ष्म ध्वनियाँ हैं, जिन्हें आप अपने कानों या किसी अन्य एम्पलीफायर से भी नहीं सुन सकते हैं, तो ऋषियों ने

अपने भौतिकवादी शरीर से उस छिपे हुए ज्ञान को कैसे पहचाना। जैसा कि मैंने कहा कि वे ऋषि शुद्ध आत्मा थे और अत्यंत उच्च सहज ज्ञान के साथ पैदा हुए थे जिसने उन्हें इस पर ध्यान करने के लिए मजबूर किया।

उन्होंने उन मंत्रों को अपने कानों से नहीं सुना, लेकिन उनकी आत्मा सीधे उन मंत्रों से जुड़ गई। वास्तव में, हम सभी अपनी आत्मा के माध्यम से सीधे उन मंत्रों को प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन हम इस शुद्ध ज्ञान को पहचानने में असमर्थ हैं क्योंकि हम सभी अशुद्ध आत्माएं हैं। हमारे पास भौतिकवादी आसक्ति, इच्छाएं, ईर्ष्या, लालच है, हम पूरी तरह से सहज नहीं हैं, बदले में किसी भी उम्मीद के बिना अपने भीतर की पुकार के प्रति समर्पित हैं।

ये मंत्र ब्रह्मांड में हर जगह हैं। कोई भी स्थान खाली नहीं है और खाली स्थान या शून्य जैसी कोई चीज़ नहीं है। पदार्थ वास्तव में हर जगह है; अंतरिक्ष भी पदार्थ ही है। यह किसी ऐसी चीज़ से बना है जिसके बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे। जैसे पदार्थ हर जगह है वैसे ही ये मंत्र भी हर जगह हैं।

मैं टेलीफोन पर बातचीत का एक उदाहरण दूंगा। अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे हैं जो दूसरे देश में है, लेकिन फिर भी, वह सुन सकता है कि आप क्या कह रहे हैं और आपके द्वारा बोले गए शब्द दूसरे व्यक्ति को भी बिल्कुल वैसे ही सुनाई देते हैं। बातचीत के दौरान आपके शब्द मूल रूप से तरंगों के माध्यम से प्रसारित होने वाली ध्वनियाँ हैं और फिर वे तरंगें या विद्युत चुम्बकीय तरंग या कंपन या आप इसे जो भी कहते हैं, सेकंड से ठीक पहले बोले गए उन्हीं शब्दों में परिवर्तित हो जाती हैं।

इसका मतलब है कि ध्वनियाँ विभिन्न प्रकार की होती हैं, चाहे वे सुनने योग्य ध्वनियाँ हों या संकेत या अन्य रूप। इसी तरह वैदिक शास्त्र भी ध्वनियों के प्रकारों के बारे में बात करते हैं, जिनके बारे में हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। कंपन के रूप में ये ध्वनियाँ केवल ऋषियों की आत्माओं द्वारा अनुभव की गई थीं और उनके कानों द्वारा नहीं सुनी गई थीं।

और फिर इन ऋषियों ने सामान्य आवाज़ में परिवर्तित कर दिया और इस आवाज़ को आम तौर पर वैदिक मंत्रों के रूप में लिया जाता है जो किताबों में लिखे गए हैं लेकिन मूल रूप से, वे किताबों में लिखे गए समान नहीं हैं बल्कि वे अपने तरंग रूपों में हैं जो छन्दों नामक पदार्थ से ढके हुए हैं।

6. वेद मंत्र के अर्थ कैसे किये गये?

पहले भाग से ही हम वेदों के मूल सिद्धांतों के बारे में समझ चुके हैं। ऋषियों ने मंत्रों नामक कंपन के माध्यम से इस अनमोल दिव्य ज्ञान को कैसे प्राप्त किया। अब अगला प्रश्न अनुवाद और सामान्य मनुष्यों तक डेटा संचरण के बारे में उठता है।

देखिए वेदों का ज्ञान ब्रह्मांड में हर जगह है, लेकिन सवाल सिर्फ इतना है कि जीव इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं। किसी को जीवन के अनुभवों से ज्ञान मिलता है, किसी को किताबें पढ़कर या शिक्षकों से सुनकर, किसी को दूसरों को देखकर आदि। ऐसे लाखों तरीके हैं जिनके माध्यम से जीव इस अनमोल ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप अन्य जीवित प्राणियों जैसे कुत्तों, बिल्लियों, पक्षियों, जंगली जानवरों, पानी के नीचे रहने वाले जीवों को देखें, तो उनकी भी अपनी क्षमता के अनुसार अपनी बुद्धि होती है। वे खाते हैं, सोते हैं, उत्पादन करते हैं, मरते हैं आदि। उन्हें कैसे पता चला कि क्या खाना है या कैसे संवाद करना है या खुद को कैसे बचाना है या कैसे उत्पादन करना है आदि।

भगवान ने उन्हें उनकी क्षमता और पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार वह ज्ञान दिया है। जब आस-पास के सभी कुत्ते भौंकने लगते हैं तो कोई भी व्यक्ति भौंकने का सही अर्थ नहीं बता सकता। केवल वही प्राणी जानता है कि भौंकने से जो ध्वनि निकलती है उसका क्या अर्थ है। जब कुत्ता भौंकना शुरू करता है तो दूसरे कुत्ते भी ऐसा ही करते हैं, लेकिन कोई कौआ या पक्षी उन पर प्रतिक्रिया नहीं करता।

इसी तरह, जब दो बिल्लियाँ आपस में लड़ती हैं या संवाद करती हैं तो हम उनकी ध्वनि भाषा नहीं समझ पाते। चीनी भाषा आपके लिए पूरी तरह से विदेशी हो सकती है और यह दो चीनी लोगों के बोलने पर आवाज़ सुनने जैसा हो सकता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसका कोई मतलब नहीं है। है न? हाँ, इसका मतलब है।

इसी तरह वैदिक मंत्र भी कंपन के रूप में सूक्ष्म ध्वनियाँ हैं जिन्हें केवल उन ऋषियों ने समझा जिन्होंने अपने गहन ध्यान के माध्यम से ब्रह्मांड में उनकी वास्तविक उपस्थिति का अनुभव किया। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा कि जिन ऋषियों ने इस स्रोत को पहचाना, वे शुरू में यह नहीं समझ पाए कि वे क्या अनुभव कर रहे हैं।

लेकिन बाद में, उनके उच्चतर अंतर्ज्ञान, जीवन अवलोकन, ध्यान और तार्किक मन के माध्यम से भगवान ने उन्हें प्रत्येक कंपन का अर्थ सिखाया।

इसके लिए उदाहरण देते हैं। कल्पना करें कि छोटे बच्चे पहली बार बिजली का झटका लगने पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। वे रोना शुरू कर देते हैं या उस चीज़ की ओर इशारा करते हैं जिससे उन्हें चोट लगी है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके पास अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त शब्द नहीं होते क्योंकि उन्हें व्याकरण और ऐसी ही दूसरी चीज़ें नहीं आती हैं। उन्हें अभी भी पाठ्यक्रम के माध्यम से पूरा वाक्य बनाना सीखना बाकी है। लेकिन जब आपके साथ भी ऐसा ही होता है तो आप अपने शब्दों और वाक्यों के माध्यम से जागरूकता व्यक्त कर सकते हैं। आप बिजली के झटके के खतरे के संकेत बोर्ड भी लगा सकते हैं।

यहाँ आप देख सकते हैं कि अनुभव तो एक ही है, लेकिन संदेश देने का तरीका अलग है। इसलिए, लोग आसानी से समझ सकते हैं कि आप क्या कहना चाह रहे हैं, लेकिन छोटे बच्चों के मामले में ऐसा नहीं है। हमें उस विशिष्ट अनुभव पर उनकी प्रतिक्रिया पर बारीकी से ध्यान देने की आवश्यकता है।

यहाँ भी यही बात है, प्राचीन ऋषियों को ऐसी दुनिया से परिचित कराया गया जो उनके लिए बिल्कुल अज्ञात थी। कल्पना करें कि आप इस पूरी दुनिया में पैदा होने वाले पहले व्यक्ति हैं।

आपके पास अपनी माँ, पिता, शिक्षक, तकनीक, शिक्षक, भवन आदि जैसा कोई संदर्भ नहीं है जिससे आपको कुछ अंदाजा हो कि आपके आस-पास क्या हो रहा है। ऋषियों को ऐसी नई दुनिया से अवगत कराया गया था और वे दिल से बच्चे थे और जैसा कि मैंने पहले कहा था कि उनका नया जीवन उनके मोक्ष चरण के समाप्त होने के बाद ही शुरू हुआ था। इसलिए, उन्हें ये कंपन संस्थाएँ मिलीं क्योंकि वे हमारी तरह शारीरिक

लगाव नहीं जानते थे। उन्हें नहीं पता था कि क्या सही है या क्या गलत या बारिश, बिल्लियाँ, कुत्ते, पानी, पेड़ क्या हैं। उनके लिए सब कुछ बिल्कुल नया था।

वैदिक मंत्रों को प्राप्त करना वास्तव में कैसे शुरू हुआ?

देखिए, हम सभी जन्म लेने वाले जीव प्रकृति में अधूरे हैं। इसलिए, हमें अपने जीवन के लिए कार्रवाई करने की आवश्यकता है। ये क्रियाएँ या तो आपकी अपनी पसंद से होती हैं या किसी प्रकार के बल के माध्यम से होती हैं जो आपको कार्रवाई करने के लिए मजबूर करती हैं। उनमें से कुछ भूख, तनाव, पेशाब, शौच, मृत्यु आदि हैं। यह आपको आवश्यक कार्रवाई करने के लिए मजबूर करेगा। ऐसा करने के लिए आपको शिक्षक की आवश्यकता नहीं है। यह अपने आप ही बाहर आता है क्योंकि आपका शरीर आपको प्रतिक्रिया करने के लिए मजबूर कर रहा है। जब आपको बिजली का झटका लगता है, तो आप तुरंत अपना हाथ तार से हटा लेते हैं। उस समय आप किताबें नहीं पढ़ते हैं या अपने शिक्षक से नहीं पूछते हैं कि आपको उन्हें हटाना चाहिए या रखना चाहिए।

शरीर आपको कार्रवाई करने के लिए मजबूर करेगा। इसी तरह ऋषियों को मानसिक तनाव में मजबूर किया गया और फिर शांति पाने के लिए उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और ध्यान करना शुरू कर दिया। उन्हें नहीं पता था कि वे क्या कर रहे थे जब तक कि वे अपने ध्यान की अवस्था में गहरे नहीं चले गए। आपने अपने आस-पास के लोगों को देखा होगा कि कुछ लोग इतनी गहरी नींद में होते हैं कि उन्हें जगाने के लिए आपको उन्हें थप्पड़ मारने की ज़रूरत पड़ सकती है। यह गहरी अवस्था के कई उदाहरणों में से एक है जहाँ आप पूरी तरह से भूल जाते हैं कि आपके आस-पास क्या हो रहा है।

इसी तरह, ऋषिगण अपने गहन ध्यान की अवस्था में इतने खो गए कि वे पूरी तरह भूल गए कि उनके आस-पास क्या हो रहा है। ध्यान के उस गहरे स्तर ने उन्हें उस अवस्था में पहुंचा दिया जहाँ उनकी आत्मा आंतरिक कंपन का अनुभव करने लगी। वे कंपन कुछ और नहीं बल्कि वैदिक मंत्र हैं।

ज्ञान को पूरी तरह से नए रूप में प्राप्त करने के बाद, उन्हें समझ में नहीं आया कि क्या करना है। इसलिए यहाँ भगवान ने उन्हें जीवन के अनुभवों, अवलोकनों, आंतरिक आह्वान, अंतर्ज्ञान शक्ति आदि के माध्यम से इसका अर्थ समझने में मदद की। तो, इस तरह से ऋषियों ने इस ज्ञान को प्राप्त करके प्रत्येक कंपनी इकाई का अर्थ अनुवादित किया।

वैदिक मंत्रों का अर्थ समझने के बाद, वे यह नहीं जानते थे कि वाक्यों या किसी अन्य रूप में अभिव्यक्ति कैसे करें क्योंकि उस समय कोई पुस्तकें, कोई व्याकरण नहीं आया था।

इसलिए, उन्होंने ध्वनि प्रारूप में मंत्रों का जाप करना शुरू कर दिया, जैसे बच्चे बिजली का झटका लगने पर रोने लगते हैं। इसलिए बाद में ऋषियों ने इस बात को अगली पीढ़ियों तक साझा करने के बारे में सोचा, इसलिए उन्होंने इस श्रेष्ठ ज्ञान को अर्थ के साथ सुपर बुद्धिमान विद्वान ब्रह्मा को दिया। यह मनुष्य था न कि भगवान जिसकी चर्चा वैदिक मंत्रों में की गई है। वैदिक मंत्रों में जिस ब्रह्मा की चर्चा की गई है, वह भगवान के कई नामों में से एक है।

और ये ब्रह्मा जिन्हें वेदों के 4 ऋषियों से ज्ञान प्राप्त हुआ, वो अलग हैं। इस ब्रह्मा ने मानव जाति के भीतर शिक्षा प्रणाली स्थापित करने के लिए शिक्षक छात्र प्रथा शुरू की। शुरू में मनुष्य भौतिकवादी मोह से विचलित नहीं थे क्योंकि उनकी ज़रूरतें सीमित थीं। जैसे-जैसे समय बीतता गया लोगों ने अपनी संतुष्टि की भावना को संतुष्ट करने के लिए नए तरीके खोजने शुरू कर दिए। इसलिए, लोगों ने मंत्रों के रूप में इस आध्यात्मिक उपहार पर पकड़ खोना शुरू कर दिया।

उन्हें वेदों के अर्थ समझने में कठिनाई होने लगी क्योंकि उनमें पहले ऋषियों की तरह उच्च बुद्धि नहीं थी। इसलिए बाद में, अगली पीढ़ी के ऋषियों ने वैदिक मंत्रों के संदेह को दूर करने के लिए पुस्तकों के रूप में व्याकरण और अन्य सहायक प्रणाली विकसित की। इसलिए, उन्हें वेदांग या उपनिषद् नामक प्रश्न उत्तर सत्र बनाना पड़ा।

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, ज्यादातर लोगों ने इस ज्ञान को नज़रअंदाज़ करना शुरू कर दिया और अपनी शिक्षा प्रणाली पर पूरी पकड़ खोते चले गए। इसलिए, अगली पीढ़ी को वेदों को समझने और वैदिक मंत्रों का अर्थ समझाने के लिए ऋषियों को कुछ ऐसा करना पड़ा जिससे चीजें काम करने की स्थिति में बनी रहें। इसलिए, उन्होंने वेदों की मूल अवधारणा को समझने के लिए सहायक पुस्तकें लिखना शुरू कर दिया।

वे सहायक पुस्तकें इस प्रकार हैं:

वेदांग - शिक्षा, कल्प, निरुक्त, चंदा, ज्योतिष, व्याकरण

ब्राह्मण ग्रन्थ - ऐतरेय, शतपथ, गोपथ, कौषीतकि

उपनिषद - ईशावास्योपनिषद, कठोपनिषद, केनोपनिषद, छान्दोग्यपनिषद आदि कुल 11 उपनिषद ऋषियों द्वारा प्रस्तुत किये गये।

पाणिनि व्याकरण-

दर्शन शास्त्र -

संस्कृत पाठ के उपयोग सहित शब्दकोश-

सत्यार्थ प्रकाश - महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा

ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका - महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा

इसलिए, ऋषियों ने वैदिक मंत्रों का अनुवाद करने के लिए ऐसी सहायक पुस्तकें गढ़ीं ताकि सामान्य मनुष्य भी उन्हें समझ सकें। इसलिए, ये मुख्य दो तरीके हैं जिनसे ऋषियों ने वैदिक मंत्रों को श्रुति और स्मृति शास्त्रों के माध्यम से डिकोड किया।

7. वेद कैसे पढ़ें?

हमने देखा है कि वेद क्या हैं, उन्हें ऋषियों को कैसे दिया गया, उन्होंने इसे सामान्य मनुष्य के लिए कैसे डिकोड किया और उन्होंने इसे पुस्तक के रूप में लिख और संग्रहीत किया। लेकिन हमें इस तथ्य को समझना होगा कि वेद पढ़ने के लिए किताबें नहीं हैं, बल्कि मंत्रों का जाप करने और प्रश्न पूछकर और बेहतर समझ के लिए अपने अंतर्ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करके इसका अर्थ समझने के लिए हैं।

इसलिए, जब भी कोई आपको किताबें दिखाता है और कहता है कि इस किताब में ऐसी बातें लिखी हैं, तो आपको खुद को याद दिलाना चाहिए कि किताबें इंसानों द्वारा लिखी जाती हैं, इसलिए इंसान द्वारा बनाई गई कोई भी चीज़ दूषित हो सकती है, लेकिन मूल रूप से यह ध्वनि प्रारूप है, इसलिए आप मूल ध्वनि में हेरफेर नहीं कर सकते।

जैसे आप प्रकृति में मौजूद आवाज़ों में हेर-फेर नहीं कर सकते जैसे कुत्ते का भौंकना, शेर का दहाड़ना, चिड़ियाँ, बिल्लियाँ, धातु की आवाज़, अधातु की आवाज़, भूकंप, लकड़ी की आवाज़ और कई अन्य प्राकृतिक आवाज़ें। आप कुत्तों के भौंकने को शब्दों में “भाऊ भाऊ” लिख सकते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मूल रूप से यह शब्दों का समूह था। अब जब मनुष्य ने इस धरती पर मौजूद अन्य जीवों की तुलना में खुद को बेहतर संस्करण के लिए अपग्रेड कर लिया है।

उन्होंने किताबें लिखीं और फिर ऑडियो, वीडियो, होलोग्राम आदि का इस्तेमाल किया ताकि आगे के उपयोग के लिए डेटा संग्रहीत किया जा सके। इसी तरह, कई वर्षों के श्रुति (श्रवण) ज्ञान के बाद ऋषियों ने इन सभी मंत्रों को एकत्र किया और पुस्तकों में संक्षिप्त किया और ये पुस्तकें ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वेद, सामवेद हैं।

इसलिए, इन पुस्तकों को पढ़ने और समझने के लिए ऋषियों ने हमें मंत्र, ऋषि, देवता, चंदा, स्वर आदि जैसे बुनियादी शब्दों और अवधारणाओं को समझने के लिए कहा है। वेदों को पढ़ना शुरू करने से पहले आपको इन शब्दों का अर्थ जानना चाहिए अन्यथा आप मंत्रों की गलत व्याख्या करेंगे जो कि अधिकांश विद्वानों ने किया था, खासकर ब्रिटिश विद्वानों और डॉ. अंबेडकर ने। मैं आपको पहले सहायक पुस्तकों को पढ़ने

वेदों में क्या है?

की सलाह दूंगा जिनका मैंने ऊपर उल्लेख किया है। एक बार जब आपको बुनियादी शब्द मिल जाते हैं तो आप वेदों को पढ़ना शुरू कर सकते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रंथ आदि, निरुक्त, यास्क आदि जैसी पुस्तकें अवश्य पढ़ें और बाद में यदि आप चाहें तो यदि आपको कोई संदेह हो तो आप मेरे मेल पर मुझसे संपर्क कर सकते हैं। मूल रूप से, हम चीजें सीख रहे हैं। मेरा मानना है कि एक इंसान होने के नाते मेरा ज्ञान सीमित होगा, लेकिन यदि आप वेदों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आकर्षण के नियम की तकनीकों का उपयोग करते हैं, तो कौन जानता है कि आपको केवल पुस्तकें पढ़ने से बेहतर स्रोत मिल सकता है। आखिरकार पिछले जन्म के कर्म आपको बेहतर स्रोत प्रदान कर सकते हैं यदि आपने यह पुस्तक खरीदी है, तो इसका मतलब है कि कहीं न कहीं ब्रह्मांड ने आपके लिए योजना बनाई है।

8. क्या वेदों में विज्ञान है?

वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है, इसलिए आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि वेदों में विज्ञान है। देखिए भारत मेसोपोटामिया या हड़प्पा या मोहनजो-दारो आदि से पहले ही समृद्ध देश था। भारतीय धन, आध्यात्मिकता, नैतिक मूल्यों आदि के मामले में बेहद समृद्ध थे। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऋषियों ने उन्हें पर्याप्त ज्ञान दिया ताकि वे समृद्धि का जीवन जी सकें।

वेदों में भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, चिकित्सा विज्ञान, कला आदि शामिल हैं, लेकिन संस्कृत भाषा के संदर्भ में और यह तब दिया गया था जब पूरी दुनिया जंगली जानवरों की तरह रह रही थी। मनुष्य एक दूसरे से बात करना या संवाद करना भी नहीं जानते थे।

इसलिए, आप ग्रामोफोन की तुलना नवीनतम स्क्रीन टच सेल फोन से नहीं कर सकते। लेकिन मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि आधुनिक विज्ञान इस बात से बहुत दूर है कि यह ब्रह्मांड कैसे बना, कैसे काम करता है या भगवान कैसे काम करते हैं आदि। आइए देखें कि वैदिक शास्त्र में क्या शामिल है।

A) आधुनिक विज्ञान के अनुसार ब्रह्मांड की रचना का सिद्धांत बनाम वेद-

हम आधुनिक विज्ञान के युग में रह रहे हैं जहाँ हमें बताया गया है कि ब्रह्मांड एक बिंदु से बना है और तब से इसका विस्तार हो रहा है और इस सिद्धांत को आम तौर पर बिग बैंग सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। लेकिन वैदिक विज्ञान इस सिद्धांत का खंडन करता है। इसलिए, यह विद्वानों के बीच चर्चा का विषय हो सकता है। आइए संक्षेप में चर्चा करें कि ब्रह्मांड निर्माण के बारे में बिग बैंग सिद्धांत क्या कहता है और फिर हम देखेंगे कि वेद इसके बारे में क्या कहते हैं।

बिग बैंग थ्योरी ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास को समझाने वाला प्रचलित ब्रह्माण्ड संबंधी मॉडल है। इस सिद्धांत के अनुसार, ब्रह्मांड लगभग 13.8 अरब साल पहले एक अत्यंत गर्म, सघन अवस्था से शुरू हुआ था और तब से इसका विस्तार हो रहा है। बिग बैंग थ्योरी के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

1. आरंभिक विलक्षणता: ब्रह्मांड एक विलक्षणता से शुरू हुआ, अनंत घनत्व और तापमान का एक बिंदु जहाँ भौतिकी के नियम, जैसा कि हम जानते हैं, टूट जाते हैं।

2. विस्तार: इस प्रारंभिक अवस्था से, ब्रह्मांड ने बिग बैंग नामक घटना में तेज़ी से विस्तार करना शुरू किया। यह विस्तार आज भी जारी है, आकाशगंगाएँ एक-दूसरे से दूर जा रही हैं।
 3. ठंडा होना और मूल तत्वों का निर्माण: जैसे-जैसे ब्रह्मांड का विस्तार हुआ, यह ठंडा होता गया, जिससे उप-परमाणु कणों और बाद में सरल परमाणुओं का निर्माण हुआ। इस प्रक्रिया से हाइड्रोजन और हीलियम का निर्माण हुआ, जो दो सबसे हल्के और सबसे प्रचुर तत्व हैं।
 4. ब्रह्मांडीय संरचनाओं का निर्माण: अरबों वर्षों में, गुरुत्वाकर्षण के कारण पदार्थ एक साथ मिलकर तारे, आकाशगंगाएँ और अन्य ब्रह्मांडीय संरचनाएँ बनाते हैं।
 5. कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड (CMB)**: बिग बैंग थ्योरी को CMB विकिरण की खोज से समर्थन मिलता है, जो प्रारंभिक ब्रह्मांड से थर्मल अवशेष है, जो ब्रह्मांड का एक स्नैपशॉट प्रदान करता है जब यह केवल 380,000 वर्ष पुराना था।
 6. अवलोकन संबंधी साक्ष्य: दूर की आकाशगंगाओं के रेडशिफ्ट के अवलोकन, जो यह संकेत देते हैं कि वे हमसे दूर जा रही हैं, सिद्धांत का और समर्थन करते हैं। यह रेडशिफ्ट एक विस्तारित ब्रह्मांड के अनुरूप है।
 7. पूर्वानुमानित सफलता: बिग बैंग थ्योरी ब्रह्मांड में प्रकाश तत्वों की सापेक्ष प्रचुरता की सफलतापूर्वक भविष्यवाणी करती है और ब्रह्मांड की बड़े पैमाने पर संरचना को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है।
- बिग बैंग थ्योरी आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान की आधारशिला है, जो अवलोकन संबंधी डेटा और सैद्धांतिक भौतिकी की एक विशाल श्रृंखला को एकीकृत करती है। हालांकि यह ब्रह्मांड के विकास को उसके शुरुआती क्षणों से लेकर उसकी वर्तमान स्थिति तक समझाता है, लेकिन बिग बैंग के कारण या उसके पहले क्या हुआ, इस बारे में सवाल अभी भी जारी शोध और अटकलों का विषय बने हुए हैं। इसे आम तौर पर सृष्टि के बिग बैंग सिद्धांत के रूप में जाना जाता है।
- अब जब वैदिक विज्ञान की बात आती है, तो यह बिग बैंग थ्योरी के विपरीत है। इसके अनुसार ब्रह्मांड की रचना कंपन की मदद से हुई है और ये कंपन वैदिक मंत्रों नामक सूक्ष्म ध्वनियों के माध्यम से उत्पन्न

होते हैं। वैदिक विज्ञान का मानना है कि पदार्थ सृष्टि से पहले भी मौजूद था और वह पदार्थ अपनी मूल अवस्था में था। इसका मतलब है कि यह अपने स्थिर, संतुलन में, शुद्धतम रूप में, समरूप, बिना किसी मिश्रण के, प्राथमिक रूप में था।

इस प्राथमिक पदार्थ में गति, तापमान, एन्थैल्पी, आवेश जैसे गुण होते हैं, लेकिन ये सभी गुण सुप्त अवस्था में थे। जैसे आपका सोता हुआ बच्चा या सोता हुआ जानवर। अगर शेर सो रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसे दहाड़ना नहीं आता। अगर कुत्ता सो रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह वफादार नहीं होगा। अगर जगुआर सो रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसने अपनी गति खो दी है। इसी तरह, पदार्थ अपनी सुप्त अवस्था या सुप्त अवस्था में था तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसने अपने गुण खो दिए हैं।

वह पदार्थ प्रकृति में सबसे सूक्ष्म है। यह परमाणु या मूल कणों से खरब गुना सूक्ष्म है। भगवान पदार्थ की इस स्थिर अवस्था को ध्वनि और कंपन पैदा करके प्रक्रिया शुरू करने के लिए तोड़ते हैं और फिर बाद में प्रक्रिया शुरू होती है। तो, यह बिग बैंग और कंपन सिद्धांत के बीच का मानवीय अंतर है जहाँ बिग बैंग कहता है कि अंतरिक्ष का विस्तार हो रहा है जबकि वैदिक विज्ञान का मानना है कि अंतरिक्ष का विस्तार नहीं हो रहा है और पदार्थ हर जगह असीम रूप से फैला हुआ है।

खाली स्थान या वैक्यूम जैसी कोई चीज नहीं है वास्तव में जिसे आधुनिक विज्ञान अंतरिक्ष कह रहा है वह भी पदार्थ की अवस्था है। इसका मतलब है कि अंतरिक्ष भी पदार्थ है जहाँ सृजन की ये सभी प्रक्रियाएँ हो रही हैं जैसे कि समुद्र मछलियों और अन्य पानी के नीचे के जीवों के लिए स्थान है। वेद स्पष्ट रूप से ब्रह्मांड के निर्माण से पहले की अवस्था के बारे में बात करते हैं।

ऋग्वेद 10.129.1 -

इसे "नासदीय सूक्त" या "सृष्टि का भजन" के नाम से भी जाना जाता है, यह हिंदू धर्म के चार वेदों में सबसे पुराने ऋग्वेद में एक प्रसिद्ध और रहस्यपूर्ण भजन है। यह भजन ब्रह्मांड की उत्पत्ति और अस्तित्व की प्रकृति के बारे में गहन दार्शनिक प्रश्नों की खोज करता है।

वेदों में क्या है?

मंत्र-

नासंदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् । किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम् ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: प्रजापति: परमेष्ठी छन्द: निचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

न । असत् । आसीत् । नो इति । सत् । आसीत् । तदानीम् । न । आसीत् । रजः । नो इति । वि०ओम
। परः । यत् । किम् । आ । अवरीवरिति । कुह । कस्य । शर्मन् । अम्भः । किम् । आसीत् । गहनम् ।
गभीरम् ॥

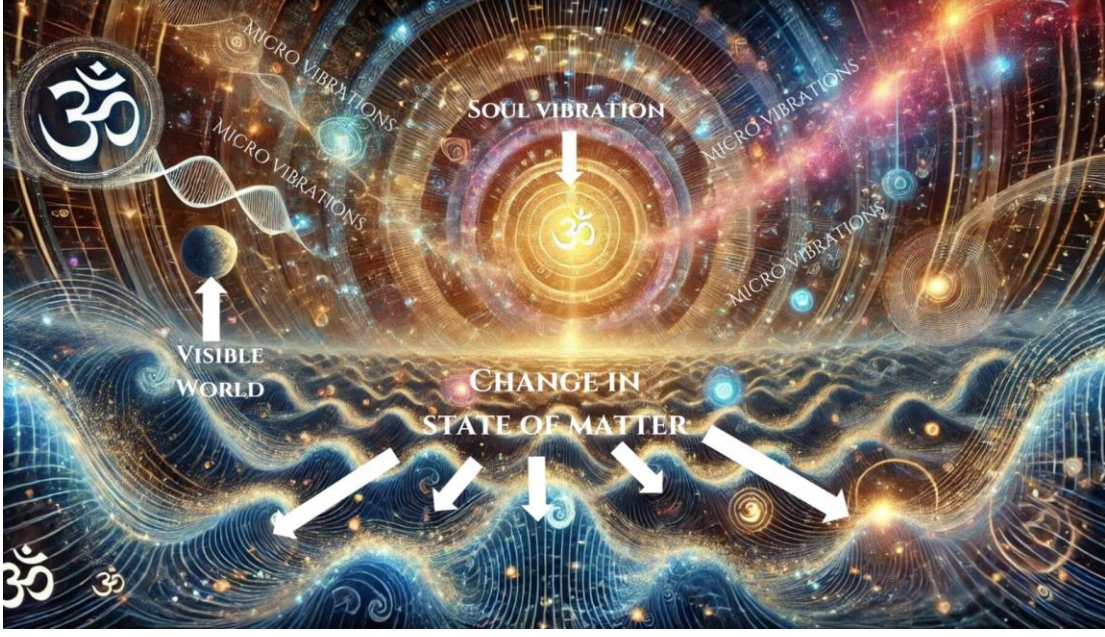
पदार्थान्वयभाषा: -

(तदानीम्) सृष्टि से पूर्व उस समय प्रलय अवस्था में (असत्-न-आसीत्) शून्य नितान्त अभाव न था (सत्-नो-आसीत्) सत्-प्रकटरूप भी कुछ न था (रजः-न-आसीत्) रज्जनात्मक कणमय गगन-अन्तरिक्ष भी न था (परः-व्योम न-उ-यत्) विश्व का परवर्ती सीमारूप विशिष्ट रक्षक आवर्त-घेरा खगोल आकाश भी न था (किम्-आ-अवरीवः) आवरणीय के अभाव से भलीभाँति आवरक भी क्या हो सके ? न था (कुह कस्य शर्मन्) कहाँ ? न कहीं भी तथा प्रदेश था, किसके सुखनिमित्त हो (गहनं गभीरम्-अम्भः किम्-आसीत्) गहन गम्भीर सूक्ष्म जल भी क्या हो सके अर्थात् नहीं था, जिससे भोग्य वस्तु उत्पन्न हो, जिसमें सृष्टि का बीज ईश्वर छोड़े ।

भावार्थभाषा: -

सृष्टि से पूर्व न शून्यमात्र अत्यन्त अभाव था, परन्तु वह जो था, प्रकटरूप भी न था, न रज्जनात्मक कणमय गगन था, न परवर्ती सीमावर्ती आवर्त घेरा था, जब आवरणीय पदार्थ या जगत् न था, तो आवर्त भी क्या हो, वह भी न था, कहाँ फिर सुख शरण किसके लिये हो एवं भोग्य भोक्ता की वर्तमानता भी न थी, सूक्ष्मजलपरमाणुप्रवाह या परमाणुसमुद्र भी न था, कहने योग्य कुछ न था, पर था, कुछ अप्रकटरूप था ।

वेदो में क्या है?



वेदों के अनुसार कंपन द्वारा निर्माण सिद्धांत

ऋग्वेद 10.129.2 -

मंत्र-

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अहन आसीत्प्रकेतः । आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्मादधान्यन्न पुरः
किं चनास ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: प्रजापति: परमेष्ठी छन्द: निचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

न । मृत्युः । आसीत् । अमृतम् । न । तर्हि । न । रात्र्याः । अहनः । आसीत् । प्रऽकेतः । आनीत् ।
अवातम् । स्वधया । तत् । एकम् । तस्मात् । ह । अन्यत् । न । पुरः । किम् । चन । आस ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(मृत्युः-न-आसीत्) सृष्टि से पूर्व मृत्यु भी न था तो फिर क्या अमृत था ? (तर्हि) उस समय मृत्यु के न होने पर (अमृतं न) अमृत न था (रात्र्याः अहनः) रात्रि का दिन का (प्रकेतः) प्रजान-पूर्वरूप (न-आसीत्) नहीं था (तत्-एकम्) तब वह एक तत्त्व (अवातम्) वायु की अपेक्षा से रहित (स्वधया) स्व धारणशक्ति से

वेदों में क्या है?

(आनीत्) स्वसत्तारूप से जीता जागता ब्रह्मतत्त्व था (तस्मात्-अन्यत्) उससे भिन्न (किम्-चन) कुछ भी (परः-न-आस) उससे अतिरिक्त नहीं था ॥

भावार्थभाषा: -

सृष्टि से पूर्व मृत्यु नहीं था, क्योंकि मरने योग्य कोई था नहीं, तो मृत्यु कैसे हो ? मृत्यु के अभाव में अमृत हो, सो अमृत भी नहीं, क्योंकि मृत्यु की अपेक्षा से अमृत की कल्पना होती है, अतः अमृत के होने की कल्पना भी नहीं, दिन रात्रि का पूर्वरूप भी न था, क्योंकि सृष्टि होने पर दिन रात्रि का व्यवहार होता है, हाँ एक तत्त्व वायु द्वारा जीवन लेनेवाला नहीं, किन्तु स्वधारणशक्ति से स्वसत्तारूप जीवन धारण करता हुआ जीता जागता ब्रह्म था, उससे अतिरिक्त और कुछ न था ॥

ऋग्वेद 10.129.2 -

मंत्र-

तम॑ आसी॒तम॑सा॒ गूळ॑हम॒ग्रेऽप्र॑के॒तं स॑ल॒लितं॑ सर्व॒मा इ॒दम् । तु॒च्छ॑येना॒भ्वपि॑हितं॒ यदासी॑त्तप॒सस्तन्म॑हि॒नाजा॑य॒तैक॑म् ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: प्रजापति: परमेष्ठी छन्द: निचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

तमः॑ । आसी॒त् । तम॑सा । गूळ॑हम् । अ॒ग्रे । अ॒प्रऽके॒तम् । स॒ल॒लितम्॑ । सर्व॒म् । आः॑ । इ॒दम् । तु॒च्छ॑येन॑ । आ॒भु । अपि॑हितम् । यत् । आसी॒त् । तप॑सः । तत् । म॒हि॒ना । अ॒जा॒य॒त् । एक॑म् ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(अग्रे) सृष्टि से पूर्व (तमसा) अन्धकार से (गूढम्) आवृत (तमः-आसीत्) अन्धकाररूप था (इदं सर्वम्) यह सब उस समय (सलिलम्-आः) फैले जल जैसा (अप्रकेतम्) अविज्ञेय-न जानने योग्य था (तुच्छयेन) तुच्छभाव से (यत्-अपिहितम्) आवृत ढका हुआ (आभु) आभु नाम से अव्यक्त उपादान कारण (आसीत्) था, जिससे

यह सृष्टि आभूत-आविर्भूत हुई (तपसः) परमात्मा के ज्ञानमय तप से (तत्-महिना) महत्तत्त्व एकरूप एक उत्पन्न हुआ ॥

भावार्थभाषा: -

सृष्टि से पूर्व अन्धकार से आच्छादित अन्धकारमय था, जलसमान अवयवरहित न जानने योग्य “आभु” नाम से परमात्मा के सम्मुख तुच्छरूप में एकदेशी अव्यक्त प्रकृतिरूप उपादान कारण था, जिससे सृष्टि आविर्भूत होती है, उसके ज्ञानमय तप से प्रथम महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ ॥

ऋग्वेद 10.129.3 -

मंत्र-

तम॑ आसी॒तम॑सा॒ गूळ॑हम॒ग्नेऽप्र॑के॒तं स॑ल॒लितं॑ सर्व॒मा इ॒दम् । तु॒च्छ॒येना॒भ्वपि॑हितं॒ यदासी॒तप॑स॒स्तन्म॑हिनाजा॒यतै॑कम् ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: प्रजापति: परमेष्ठी छन्द: निचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

तमः॑ । आसी॒त् । तम॑सा । गूळ॑हम् । अग्ने॑ । अ॒प्रऽके॒तम् । स॑ल॒लितम् । सर्व॒म् । आः॑ । इ॒दम् । तु॒च्छ॒येन॑ । आ॒भु । अपि॑ऽहितम् । यत् । आसी॒त् । तप॑सः । तत् । म॒हिना॑ । अ॒जा॒यत् । एक॑म् ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(अग्ने) सृष्टि से पूर्व (तमसा) अन्धकार से (गूळम्) आवृत (तमः-आसीत्) अन्धकाररूप था (इदं सर्वम्) यह सब उस समय (सलिलम्-आः) फैले जल जैसा (अप्रकेतम्) अविज्ञेय-न जानने योग्य था (तुच्छयेन) तुच्छभाव से (यत्-अपिहितम्) आवृत ढका हुआ (आभु) आभु नाम से अव्यक्त उपादान कारण (आसीत्) था, जिससे यह सृष्टि आभूत-आविर्भूत हुई (तपसः) परमात्मा के ज्ञानमय तप से (तत्-महिना) महत्तत्त्व एकरूप एक उत्पन्न हुआ ॥

भावार्थभाषा: -

वेदों में क्या है?

सृष्टि से पूर्व अन्धकार से आच्छादित अन्धकारमय था, जलसमान अवयवरहित न जानने योग्य “आभु” नाम से परमात्मा के सम्मुख तुच्छरूप में एकदेशी अव्यक्त प्रकृतिरूप उपादान कारण था, जिससे सृष्टि आविर्भूत होती है, उसके ज्ञानमय तप से प्रथम महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ ॥

ऋग्वेद 10.129.4 -

मंत्र-

कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् । सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या क्वयौ मनीषा ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: प्रजापति: परमेष्ठी छन्द: त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

कामः । तत् । अग्रे । सम् । अवर्तत । अधि । मनसः । रेतः । प्रथमम् । यत् । आसीत् । सतः । बन्धुम् । असति । निः । अविन्दन् । हृदि । प्रतीष्या । क्वयः । मनीषा ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(अग्रे कामः) आरम्भ सृष्टि में काम अर्थात् अभिलाष-इच्छाभाव (तत्-यत्) वह जो (मनसः-अधि) मन के अन्दर (समवर्तत) वर्तमान होता है (प्रथमं रेतः) प्रथम प्राणी का बीज (आसीत्) है (क्वयः) क्रान्तदर्शी विद्वान् (असति) अशरीर चेतन आत्मा में (सतः) शरीर के निमित्त (बन्धुम्) बाँधनेवाले उस रेतः-मानवबीजशक्ति को (मनीषा) विवेचनशील बुद्धि से (प्रतीष्य) प्रतीत करके निश्चित करके (हृदि) हृदय में (निः-अविन्दन्) निर्विण्ण हो जाते हैं, वैराग्य को प्राप्त हो जाते हैं ॥

भावार्थभाषा: -

आरम्भ सृष्टि में भोगों के लिए कामभाव वर्तमान होता है, जो मानव की बीजशक्तिरूप में प्रकट होता है, क्रान्तदर्शी विद्वान् आत्मा के अन्दर शरीर का बाँधनेवाला है, उसे समझ कर वैराग्य को प्राप्त होते हैं ॥

ऋग्वेद 10.129.5 -

वेदो में क्या है?

मंत्र-

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीऽदुपरि स्विदासीऽत् । रेतोधा आसन्महिमान् आसन्त्स्वधा
अवस्तात्प्रयतिः पुरस्तात् ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषिः प्रजापतिः परमेश्वरी छन्दः त्रिष्टुप् स्वरः धैवतः

पद पाठ -

तिरश्चीनः । वि॒ततः । र॒श्मिः । ए॒षाम् । अ॒धः । स्वि॒त् । आ॒सी॒त् । उ॒परि॑ । स्वि॒त् । आ॒सी॒त् । रेतो॒धाः
। आ॒सन् । म॒हिमानः॑ । आ॒सन् । स्व॒धा । अ॒वस्ता॑त् । प्र॒यतिः॑ । पुरस्ता॑त् ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(रेतोधाः) प्राणी सृष्टि से पूर्व शरीर की बीजशक्ति कामभाव रेत नाम से कही है, उस रेत अर्थात् मानवबीजशक्ति को धारण करनेवाले आत्माएँ (आसन्) थे (महिमानः-आसन्) वे महान्-अर्थात् असंख्यात थे (एषां-रश्मिः) इनकी बन्धनडोरी या लगाम पूर्वजन्म में किये कर्मों का संस्कार है (तिरश्चीनः-विततः) वह संस्कार विस्तृत फैला हुआ है, जो कि (अधः स्वि-आसीत्) निकृष्ट योनि में जन्म देने का हेतु है तथा (उपरि स्वि-आसीत्) उत्कृष्ट योनि में जन्म देने का हेतु है (अवस्तात् स्वधा) शरीर के अवर भाग में स्वधारणा जन्मग्रहण करना (पुरस्तात् प्रयतिः) और शरीर के पर भाग में मृत्यु है ॥

भावार्थभाषा: -

भोगों की कामनारूप मानवबीजशक्ति को धारण करनेवाले आत्मा सृष्टि से पहले थे और वे असंख्यात थे, इनका पूर्वकर्मकृत संस्कार डोरी या लगाम के समान शरीर में खींच कर लाता है, वह निकृष्टयोनिमबन्धी और उत्कृष्टयोनिमबन्धी होता है, शरीर के अवरभाग में जन्म है और परभाग में प्रयाण मृत्यु है ॥

ऋग्वेद 10.129.6 -

मंत्र-

को अ॒र्द्धा वे॒द क इ॒ह प्र वो॒च॒त्कु॒त आ॒जा॒ता कु॒त इ॒यं वि॒सृ॒ष्टिः । अ॒र्वाग्दे॒वा अ॒स्य वि॒सर्ज॑ने॒नाथा॒ को वे॒द यत॑
आब॒भूव॑ ॥

देवताः भाववृत्तम् ऋषिः प्रजापतिः परमेष्ठी छन्दः त्रिष्टुप् स्वरः धैवतः

पद पाठ -

कः । अ॒र्द्धा । वे॒द । कः । इ॒ह । प्र । वो॒च॒त् । कु॒तः । आ॒जा॒ता । कु॒तः । इ॒यम् । वि॒सृ॒ष्टिः । अ॒र्वाक्
। दे॒वाः । अ॒स्य । वि॒सर्ज॑नेन । अथ॑ । कः । वे॒द । यतः॑ । आ॒ब॒भूव॑ ॥

पदार्थान्वयभाषाः -

(कः) कौन (अ॒र्द्धा) तत्त्व से-यथार्थ (वे॒द) जाने (कः) कौन (इ॒ह) इस विषय में (प्र वो॒च॒त्) प्रवचन कर सके-
कह सके (इ॒यं वि॒सृ॒ष्टिः) यह विविध सृष्टि (कु॒तः) किस निमित्तकारण से (कु॒तः-आ॒जा॒ता) किस उपादान से
प्रकट हुई-उत्पन्न हुई (अ॒स्य वि॒सर्ज॑नेन) इसके विसर्जन से उत्पादन से (अ॒र्वाक्-दे॒वाः) पीछे उत्पन्न हुए
विद्वान् हैं (अथ कः) पुनः कौन (वे॒द) जान सके (यतः-आब॒भूव॑) जिस उपादान से ये आविर्भूत हुई-उत्पन्न
हुई ॥

भावार्थभाषाः -

यह विविध सृष्टि किस निमित्तकारण से और किस उपादानकारण से उत्पन्न होती है, इस बात को कोई
बिरला विद्वान् ही यथार्थरूप में जान सकता है, क्योंकि सभी विद्वान् सृष्टि उत्पन्न होने के पश्चात् होते
हैं-अर्थात् कोई तत्त्ववेत्ता योगी ही इसको समझ सकता है और कह सकता है ॥

ऋग्वेद 10.129.7 -

मंत्र-

इ॒यं वि॒सृ॒ष्टि॒र्यत॑ आब॒भूव॑ यदि॑ वा द॒धे यदि॑ वा॒ न । यो अ॒स्याध्य॑क्षः पर॒मे व्यो॑म॒न्त्सो अ॒ङ्ग वे॒द यदि॑ वा॒ न
वे॒द ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: प्रजापति: परमेष्ठी छन्द: पादनिचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

इयम् । विऽसृष्टिः । यतः । आऽबभूव । यदि । वा । दधे । यदि । वा । न । यः । अऽस्य । अधिऽअक्षः । परमे । विऽओमन् । सः । अङ्ग । वेद । यदि । वा । न । वेद ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(इयं विसृष्टिः) यह विविध सृष्टि (यतः-आबभूव) जिस उपादान से उत्पन्न हुई है (अस्य यः-अध्यक्षः) इस उपादान का जो अध्यक्ष है (परमे व्योमन्) महान् आकाश में वर्तमान है (अङ्ग) हे जिज्ञासु ! (सः) वह परमात्मा (यदि वा दधे) यदि तो चाहे तो न धारण करे अर्थात् संहार कर दे (यदि वेद) यदि उपादान कारण को जाने, अपने विज्ञान में लक्षित करे, सृष्टिरूप में परिणत करे (यदि वा न वेद) यदि न जाने-स्वज्ञान में लक्षित न करे सृष्टिरूप में परिणत न करे, इस प्रकार सृष्टि और प्रलय उस परमात्मा के अधीन हैं ॥

भावार्थभाषा: -

यह विविध सृष्टि जिस उपादान-कारण से उत्पन्न होती है, उस उपादान कारण अव्यक्त प्रकृति का वह परमात्मा स्वामी-अध्यक्ष है, वह उससे सृष्टि को उत्पन्न करता है और उसका संहार भी करता है। प्रकृति को जब लक्ष्य करता है, तो उसे सृष्टि के रूप में ले आता है, नहीं लक्ष्य करता है, तो प्रलय बनी रहती है, इस प्रकार सृष्टि और प्रलय परमात्मा के अधीन हैं ॥

हमने स्कूल में पढ़ा है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और सूर्य हमारे सौरमंडल का प्रमुख तारा है। लेकिन वेद आधुनिक विज्ञान से बहुत पुराने हैं जो पृथ्वी, चंद्रमा, सूर्य के बारे में बात करते हैं। लेकिन जब ऐसी चीजों के बारे में बात करने की बात आती है तो हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि वेद आपको ब्रह्मांड के बारे में सामान्य ज्ञान देते हैं और मनुष्य के लिए अधिक गहन शोध करने का अगला कदम है। जब वेद सूर्य की बात करता है तो इसका मतलब कोई भी सूर्य होता है, न कि हमारे सौरमंडल का कोई विशिष्ट सूर्य। जब वेद पृथ्वी की बात करता है तो इसका मतलब है कि यह सामान्य रूप से पृथ्वी ग्रह है, न कि हमारे सौरमंडल की कोई विशिष्ट पृथ्वी। ये ग्रह ब्रह्मांड में कहीं भी हो सकते हैं।

वेदों में क्या है?

अगर हम यजुर्वेद को पढ़ें तो हम पाते हैं कि पृथ्वी (गौ) गर्मी के लिए अपने पानी के साथ सूर्य के चारों ओर घूमती है।

यजुर्वेद ३.६-

मंत्र- आयं गौः पृश्नि॑र॒क्रमी॑द॒स॒दन् मा॒तरं॑ पु॒रः। पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त्स्वः॑ ॥६॥

देवता: अग्निर्देवता ऋषिः सर्पराज्ञी कद्रुर्ऋषिः छन्दः निचृद् गायत्री स्वरः षड्जः

पद पाठ -

आ। अ॒यम्। गौः। पृ॒श्निः। अ॒क्र॒मीत्। अ॒स॒दत्। मा॒तर॑म्। पु॒रः। पि॒तर॑म्। च। प्र॒य॒न्नि॒ति॒ प्र॒य॒न्। स्वरि॑ति॒ स्वः॑ ॥

पदार्थान्वयभाषा: -

(अयम्) यह प्रत्यक्ष (गौः) गोलरूपी पृथिवी (पितरम्) पालने करनेवाले (स्वः) सूर्यलोक के (पुरः) आगे-आगे वा (मातरम्) अपनी योनिरूप जलों के साथ वर्तमान (प्रयन्) अच्छी प्रकार चलती हुई (पृश्निः) अन्तरिक्ष अर्थात् आकाश में (आक्रमीत्) चारों तरफ घूमती है ॥

भावार्थभाषा: -

मनुष्यों को जानना चाहिये कि जिससे यह भूगोल पृथिवी जल और अग्नि के निमित्त से उत्पन्न हुई अन्तरिक्ष वा अपनी कक्षा अर्थात् योनिरूप जल के सहित आकर्षणरूपी गुणों से सब की रक्षा करनेवाले सूर्य के चारों तरफ क्षण-क्षण घूमती है, इसी से दिन रात्रि, शुक्ल वा कृष्ण पक्ष, ऋतु और अयन आदि काल-विभाग क्रम से सम्भव होते हैं ॥

हम अपने स्कूल के दिनों से ही जानते हैं कि सूर्य अन्य ग्रहों के लिए प्रकाश का स्रोत है, जैसा कि आधुनिक विज्ञान ने हमें बताया है। लेकिन वेदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि स्वयं प्रकाशित होने वाली वस्तुएं गैर-स्वयं प्रकाशित वस्तुओं को प्रकाश देती हैं। अथर्ववेद में इसका उल्लेख है जिसमें सूर्य जैसी वस्तुओं के बारे में बताया गया है जो स्वयं प्रकाशित होती हैं और दूसरों को प्रकाश प्रदान करती हैं।

अथर्ववेद » कांड:14 » सूक्त:1 » मंत्र:1

स॒त्येनोत्त॑भि॒ता भूमिः॑ सूर्ये॒णोत्त॑भि॒ता द्यौः॑ । ऋ॒तेना॑दि॒त्यास्ति॑ष्ठन्ति दि॒वि सोमो॑ अ॒धि श्रि॒तः ॥

पद पाठ -

स॒त्येन॑ । उत्त॑भि॒ता । भूमिः॑ । सूर्ये॒ण । उत्त॑भि॒ता । द्यौः॑ । ऋ॒तेन॑ । आ॒दि॒त्याः । ति॒ष्ठन्ति॑ । दि॒वि । सोमः॑
। अ॒धि । श्रि॒तः ॥

पदार्थान्वयभाषाः -

(स॒त्येन॑) सत्यस्वरूपपरमेश्वर करके (भूमिः॑) भूमि (उत्त॑भि॒ता) [आकाश में] उत्तमता से थाँभी गयी है, और (सूर्ये॒ण) सूर्यलोक करके (द्यौः॑) प्रकाश (उत्त॑भि॒ता) उत्तम रीति से थाँभा गया है। (ऋ॒तेन॑) सत्य नियम द्वारा (आ॒दि॒त्याः) प्रकाशमान किरणें [वा अखण्ड सूक्ष्मपरमाणु] (ति॒ष्ठन्ति॑) ठहरते हैं, और (दि॒वि) [सूर्य के] प्रकाश में (सोमः॑) चन्द्रमा (अ॒धि) यथावत् (श्रि॒तः) ठहरा हुआ है ॥

भावार्थभाषाः -

लोक दो प्रकार के हैं—एक प्रकाश करनेवाले जैसे सूर्य आदि और दूसरे अप्रकाशमान जैसे पृथिवी चन्द्र आदि। परमेश्वर के नियम से प्रकाशक सूर्य आदि लोक प्रकाश्य पृथिवी चन्द्र आदि लोकों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करते हैं से हैं ॥

ऋग्वेद » मंडल:10 » सूक्त:85 » मंत्र:1 | अष्टक:8 » अध्याय:3 » वर्ग:20 » मंत्र:1 | मण्डल:10 » अनुवाक:7 » मन्त्र:1

मन्त्रः स॒त्येनोत्त॑भि॒ता भूमिः॑ सूर्ये॒णोत्त॑भि॒ता द्यौः॑ । ऋ॒तेना॑दि॒त्यास्ति॑ष्ठन्ति दि॒वि सोमो॑ अ॒धि श्रि॒तः ॥

देवताः सोमः ऋषिः सूर्या सावित्री छन्दः निचृदनुष्टुप् स्वरः गान्धारः

पद पाठ -

स॒त्येन॑ । उत्त॑भि॒ता । भूमिः॑ । सूर्ये॒ण । उत्त॑भि॒ता । द्यौः॑ । ऋ॒तेन॑ । आ॒दि॒त्याः । ति॒ष्ठन्ति॑ । दि॒वि । सोमः॑
। अ॒धि । श्रि॒तः ॥

पदार्थान्वयभाषाः-

(भूमिः) पृथिवीरूप में भूभक्ति-भूभागरूप (सत्येन) उसके अन्दर वर्तमान अग्नि द्वारा (उत्तमिता) कठिन-ठोस की गई है, प्रकाशरूप नक्षत्रतारावली (सूर्येण) प्रकाशपिण्ड सूर्य के द्वारा उदीप्त की गई (आदित्याः-ऋतेन-तिष्ठन्ति) आदान शक्तिवाली किरणें या मास सूर्य के द्वारा स्थिर होते हैं (सोमः) सोम्य उत्पादक धर्म (दिवि) सूर्य के आश्रय में (अधिश्रितः) अधिष्ठित है ॥

भावार्थभाषा: -पृथिवी को ठोस बनानेवाला पृथिवी के अन्दर का अग्नि है, जो पृथिवी के सूक्ष्म अंशों को अपनी ओर खींच रहा है, द्युलोक-नक्षत्र तारामण्डल को सूर्य चमकाता है, किरणें या मास सूर्य को आश्रित करते हैं और सोम गुणवाला उत्पादन धर्म सूर्य को आश्रय बनाता है ॥

ब्रह्माण्ड एक बार नहीं बना है, बल्कि अनगिनत बार बना है। भगवान ने इस ब्रह्माण्ड को बनाया है और बार-बार बनाएंगे। इसका प्रमाण ऋग्वेद में है। समय की रचना कब हुई। भगवान ने इस ब्रह्माण्ड को वास्तव में कैसे बनाया।

ऋग्वेद » मण्डल:10» सूक्त:190» मन्त्र:1 | अष्टक:8» अध्याय:8» वर्ग:48» मन्त्र:1 | मण्डल:10» अनुवाक:12» मन्त्र:1

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: अघमर्षणो माधुच्छन्दसः छन्द: विराडनुष्टुप् स्वर: गान्धारः

पद पाठ -

ऋतम् । च । सत्यम् । च । अभीद्धात् । तपसः । अधि । अजायत । ततः । रात्री । अजायत । ततः ।

समुद्रः । अर्णवः ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(ऋतं च) यथार्थ सर्वविद्याधिकरण वेदज्ञान भी (सत्यं च) सत् वर्तमान पदार्थों में साधु-सब को साधनेवाला तीन गुणोंवाला प्रकृति-नामक उपादान तथा (अभीद्धात् तपसः) सब ओर से दीप्त ज्ञानमय तप से (अध्यजायत) प्रसिद्ध होता है (ततः) उससे (रात्री) महाप्रलय के अनन्तर प्रलयरूप रात्रि (अजायत) प्रसिद्ध होती है (ततः) पुनः (अर्णवः समुद्रः) गतिमान् परमाणु समुद्र प्रसिद्ध होता है ॥

वेदों में क्या है?

भावार्थभाषा:-

सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व उत्पत्ति, स्थितिविषयक मूलज्ञान वेद तथा उपादानकारण प्रकृतिरूप अव्यक्त सृष्टिकर्ता परमेश्वर के ज्ञानमय तप से उसके सम्मुख आते हैं। दोनों के संसर्ग से महाप्रलय का अन्त प्रलयरूप रात्रि बनती है, उससे गतिवाला हलचल करता हुआ परमाणुओं का समुद्र प्रकट हो जाता है, यह हलचल सृष्टिप्रवाह को चालू करती है ॥

ऋग्वेद » मण्डल:10» सूक्त:190» मन्त्र:2 | अष्टक:8» अध्याय:8» वर्ग:48» मन्त्र:2 | मण्डल:10» अनुवाक:12» मन्त्र:2

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: अघमर्षणो माधुच्छन्दसः छन्द: अनुष्टुप् स्वर: गान्धार:

पद पाठ -

समुद्रात् । अर्णवात् । अधि । सव्वत्सरः । अजायत । अहोरात्राणि । विदधत् । विश्वस्य । मिषतः । वशी ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(अर्णवात्) गतिमान् (समुद्रात्-अधि) परमाणुसमुद्र के ऊपर-उसके अनन्तर (संवत्सरः) संसार भर का काल (अजायत) प्रसिद्ध होता है (मिषतः-विश्वस्य) गति करते हुए विश्व-पृथिवी आदि पिण्ड के (अहोरात्राणि) दिन और रातों को-अहर्गणों को किसके कितने हों (विदधत्) यह विधान करता हुआ (वशी) परमात्मा स्वामी होता है ॥

भावार्थभाषा:-

गतिमान् परमाणुसमुद्र के पश्चात् विश्व का काल नियत होता है, फिर गति करते हुए प्रत्येक पिण्ड के दिन-रात परमात्मा नियत करता है ॥

ऋग्वेद » मण्डल:10» सूक्त:190» मन्त्र:3 | अष्टक:8» अध्याय:8» वर्ग:48» मन्त्र:3 | मण्डल:10» अनुवाक:12» मन्त्र:3

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

वेदों में क्या है?

देवता: भाववृत्तम् ऋषि: अघमर्षणो माधुच्छन्दसः छन्दः पादनिचृत्त्रिष्टुप् स्वरः गान्धारः

पद पाठ - सूर्याचन्द्रमसौ । धाता । यथापूर्वम् । अकल्पयत् । दिवम् । च । पृथिवीम् । च । अन्तरिक्षम् ।
अथो इति । स्वः ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(धाता) धारण करनेवाला परमेश्वर (सूर्याचन्द्रमसौ) सूर्य और चन्द्रमा को (यथापूर्वम्) पूर्वसृष्टि में जैसे रचा था, वैसा ही तथा (दिवं च पृथिवीं च-अन्तरिक्षं च) द्युलोक को, पृथिवीलोक को और अन्तरिक्ष-लोक को (अथ) और (स्वः) इनसे भिन्न लोक को (अकल्पयत्) रचा है-या रचता है ॥

भावार्थभाषा:-

संसार को धारण करनेवाले विधाता परमात्मा ने सूर्य चन्द्रमा द्युलोक पृथिवीलोक अन्तरिक्षलोक और अन्य लोक-लोकान्तरों को पूर्व सृष्टि में जैसे रचा था, वैसे ही इस सृष्टि में रचा है, आगे भी रचता रहेगा ॥

सभी ग्रहों में से सबसे पहले आधुनिक विज्ञान के अनुसार सूर्य की उत्पत्ति हुई थी और ऋग्वेद में भी यही बात कही गई है ।

ऋग्वेद » मण्डल:10» सूक्त:72» मन्त्र:8 | अष्टक:8» अध्याय:3» वर्ग:2» मन्त्र:3 | मण्डल:10» अनुवाक:6»
मन्त्र:8

मन्त्र-

अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्वः१०॥स्परि । देवाँ उप प्रैत्सप्तभिः परां मार्ताण्डमास्यत् ॥

देवता: देवा: ऋषि: बृहस्पतिर्बृहस्पतिर्वा लौक्य अदितिर्वा दाक्षायणी छन्दः विराडनुष्टुप् स्वरः गान्धारः

पद पाठ -

अष्टौ । पुत्रासः । अदितेः । ये । जाताः । तन्वः । परि । देवान् । उप । प्र । ऐत् । सप्तभिः । परां । मार्ताण्डम् । आस्यत् ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(अदितेः) आरम्भ सृष्टि में वर्तमान अखण्ड अग्नि के (अष्टौ पुत्रासः) मित्रादि आठ पुत्र अथवा अदिति-उषा के आठ प्रहर हैं (तन्वः-परि जाता) उस फैली हुई अग्नि या उषा के पश्चात् प्रकट हुए (सप्तभिः-देवान्-उपप्रेत) सात लोकों या प्रहरों को उपयुक्त करती है (मार्तण्डं परा-आस्यत्) आठवें मार्तण्ड नामक सूर्य या प्रहर को प्रधानरूप से प्रकाशित करती है, प्रकट करती है ॥

भावार्थभाषा:-

सृष्टि के आरम्भ में अखण्ड अग्नि से सूर्यादि खण्डरूप गोले उत्पन्न होते हैं। प्रधान गोला मार्तण्ड नाम का है एवं प्रातःकाल की उषा से प्रहरों का विकास होता है ॥

वेदों में गणित-

यह ज्ञान तब दिया गया था जब जैसा कि मैंने कहा कि पूरी दुनिया मानव बुद्धि के बारे में अनभिज्ञ थी और ये मंत्रों का संकलन मानव की बुद्धि जागरूकता के पहले चरण में ज्ञान का पहला स्रोत था। वेदों में कई मंत्र दिए गए हैं जो गणित के संकेत देते हैं और उनमें से एक यजुर्वेद है।

यजुर्वेद » अध्याय:18» मन्त्र:24

मन्त्र -

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मे
 मऽएकादश च मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे
 सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मे मऽएकविंशतिश्च मऽएकविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे
 त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे
 नवविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे मऽएकत्रिंशच्च मऽएकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे यजेन कल्पन्ताम्
 ॥

देवता: विषमाङ्कगणितविद्याविदात्मा देवता ऋषि: देवा ऋषय: छन्द: संकृतिः, विराट्
 संकृति: स्वर: गान्धारः

पद पाठ -

वेदों में क्या है?

एका। च। मे। तिस्रः। च। मे। तिस्रः। च। मे। पञ्च। च। मे। पञ्च। च। मे। सप्त। च। मे। सप्त। च। मे।
 नव। च। मे। नव। च। मे। एकादश। च। मे। एकादश। च। मे। त्रयोदशेति त्रयःसदश। च। मे। त्रयोदशेति
 त्रयःसदशः। च। मे। पञ्चदशेति पञ्चसदश। च। मे। पञ्चदशेति पञ्चदश। च। मे। सप्तदशेति सप्तसदश। च।
 मे। सप्तदशेति सप्तसदश। च। मे। नवदशेति नवसदश। च। मे। नवदशेति नवसदश। च। मे।
 एकविंशतिरित्येकसविंशतिः। च। मे। एकविंशतिरित्येकसविंशतिः। च। मे। त्रयोविंशतिरिति
 त्रयःसविंशतिः। च। मे। त्रयोविंशतिरिति त्रयःसविंशतिः। च। मे। पञ्चविंशतिरिति पञ्चसविंशतिः। च।
 मे। पञ्चविंशतिरिति पञ्चसविंशतिः। च। मे। सप्तविंशतिरिति सप्तसविंशतिः। च। मे।
 सप्तविंशतिरिति सप्तसविंशतिः। च। मे। नवविंशतिरिति नवसविंशतिः। च। मे। नवविंशतिरिति
 नवसविंशतिः। च। मे। एकत्रिंशदित्येकसत्रिंशत्। च। मे। एकत्रिंशदित्येकसत्रिंशत्। च। मे। त्रयस्त्रिंशदिति
 त्रयःसत्रिंशत्। च। मे। युजेन। कल्पन्ताम् ॥२४ ॥

पदार्थान्वयभाषा :-

(युजेन) मेल करने अर्थात् योग करने से (मे) मेरी (एका) एक संख्या (च) और दो (मे) मेरी (तिस्रः) तीन
 संख्या (च) फिर (मे) मेरी (तिस्रः) तीन (च) और दो (मे) मेरी (पञ्च) पाँच (च) फिर (मे) मेरी (पञ्च) पाँच
 (च) और दो (मे) मेरी (सप्त) सात (च) फिर (मे) मेरी (सप्त) सात (च) और दो (मे) मेरी (नव) नौ (च)
 फिर (मे) मेरी (नव) नौ (च) और दो (मे) मेरी (एकादश) ग्यारह (च) फिर (मे) मेरी (मे) मेरी (एकादश)
 ग्यारह (च) और दो (मे) मेरी (त्रयोदश) तेरह (च) फिर (मे) मेरी (त्रयोदश) तेरह (च) और दो (मे) मेरी
 (पञ्चदश) पन्द्रह (च) फिर (मे) मेरी (पञ्चदश) पन्द्रह (च) और दो (मे) मेरी (सप्तदश) सत्रह (च) फिर
 (मे) मेरी (सप्तदश) सत्रह (च) और दो (मे) मेरी (नवदश) उन्नीस (च) फिर (नवदश) उन्नीस (च) और दो
 (मे) मेरी (एकविंशतिः) इक्कीस (च) फिर (मे) मेरी (एकविंशतिः) इक्कीस (च) और दो (मे) मेरी (त्रयोविंशतिः)
 तेईस (च) फिर (मे) मेरी (त्रयोविंशतिः) तेईस (च) और दो (मे) मेरी (पञ्चविंशतिः) पच्चीस (च) फिर (मे)
 मेरी (पञ्चविंशतिः) पच्चीस (च) और दो (मे) मेरी (सप्तविंशतिः) सत्ताईस (च) फिर (मे) मेरी (सप्तविंशतिः)
 सत्ताईस (च) और दो (मे) मेरी (नवविंशतिः) उनतीस (च) फिर (मे) मेरी (नवविंशतिः) उनतीस (च) और दो
 (मे) मेरी (एकत्रिंशत्) इकतीस (च) फिर (मे) मेरी (एकत्रिंशत्) इकतीस (च) और दो (मे) मेरी (त्रयस्त्रिंशत्)

वेदो में क्या है?

तैंतीस (च) और आगे भी इसी प्रकार संख्या (कल्पन्ताम) समर्थ हों। यह एक योगपक्ष है ॥१॥२४॥ अब दूसरा पक्ष-(यज्ञेन) योग से विपरीत दानरूप वियोगमार्ग से विपरीत संगृहीत (च) और संख्या दो के वियोग अर्थात् अन्तर से [जैसे] (मे) मेरी (कल्पन्ताम) समर्थ हों, वैसे (मे) मेरी (त्रयस्त्रिंशत्) तैंतीस संख्या (च) दो के देने अर्थात् वियोग से (मे) मेरी (एकत्रिंशत्) इकतीस (च) फिर (मे) मेरी (एकत्रिंशत्) इकतीस (च) दो के वियोग से (मे) मेरी (नवविंशतिः) उनतीस (च) फिर (मे) मेरी (नवविंशतिः) उनतीस (च) दो के वियोग से (मे) मेरी (सप्तविंशतिः) सत्ताईस समर्थ हों, ऐसे सब संख्याओं में जानना चाहिये ॥ यह वियोग से दूसरा पक्ष है ॥२॥२४॥ अब तीसरा (मे) मेरी (एका) एक संख्या (च) और (मे) मेरी (तिस्रः) तीन संख्या (च) परस्पर गुणी, (मे) मेरी (तिस्रः) तीन संख्या (च) और (मे) मेरी (पञ्च) पाँच संख्या (च) परस्पर गुणित, (मे) मेरी (पञ्च) पाँच संख्या (च) और (मे) मेरी (सप्त) सात संख्या (च) परस्पर गुणित, (मे) मेरी (सप्त) सात संख्या (च) और (मे) मेरी (नव) नव संख्या (च) परस्पर गुणित, (मे) मेरी (नव) नव संख्या (च) और (मे) मेरी (एकादश) ग्यारह संख्या (च) परस्पर गुणित, इस प्रकार अन्य संख्या (यज्ञेन) उक्त बार-बार योग अर्थात् गुणन से (कल्पन्ताम) समर्थ हों। यह गुणन विषय से तीसरा पक्ष है ॥

भावार्थभाषा :-

इस मन्त्र में (यज्ञेन) इस पद से जोड़ना-घटाना लिये जाते हैं, क्योंकि जो यज धातु का सङ्गतिकरण अर्थ है, उससे सङ्ग कर देना अर्थात् किसी संख्या को किसी संख्या से योग कर देना वा यज धातु का जो दान अर्थ है, उससे ऐसी सम्भावना करनी चाहिये कि किसी संख्या का दान अर्थात् व्यय करना निकाल-डालना यही अन्तर है। इस प्रकार गुणन, भाग, वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, भागजाति, प्रभागजाति आदि जो गणित के भेद हैं, वे योग और अन्तर से ही उत्पन्न होते हैं, क्योंकि किसी संख्या को किसी संख्या से एक बार मिला दे तो योग कहाता है, जैसे $2+8=10$ अर्थात् २ में ८ जोड़ें तो १० होते हैं। ऐसे यदि अनेक बार संख्या में संख्या जोड़ें तो उसको गुणन कहते हैं, जैसे अर्थात् $2*8=16$, २ को ८ बार अलग अलग जोड़ें वा २ को ८ चार से गुणे तो १६ होते हैं। ऐसे ही ८ को ८ चौगुना कर दिया तो ८ का वर्ग ६४ हुए, ऐसे ही अन्तर से भाग, वर्गमूल, घनमूल आदि निष्पन्न होते हैं अर्थात् किसी संख्या को जोड़ देवे वा किसी प्रकारान्तर से

वेदों में क्या है?

घटा देवे, इसी योग वा वियोग से बुद्धिमानों की यथामति कल्पना से व्यक्त, अव्यक्त, अङ्कगणित और बीजगणित आदि समस्त गणितक्रिया उत्पन्न होती हैं। इस कारण इस मन्त्र में दो के योग से उत्तरोत्तर संख्या वा दो के वियोग से पूर्व पूर्व संख्या अच्छे प्रकार दिखलाई हैं, वैसे गुणन का भी कुछ प्रकार दिखलाया है, यह जानना चाहिये ॥

यजुर्वेद » अध्याय:18» मन्त्र:25

मन्त्र -

चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंशच्च मे द्वात्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे युजेन कल्पन्ताम् ॥

देवता: समाङ्कगणितविद्याविदात्मा देवता ऋषि: पूर्वदेवा ऋषय: छन्द: भुरिक् पङ्क्ति: स्वर: पञ्चम:

पद पाठ -

चतस्रः। च। मे। अष्टौ। च। मे। अष्टौ। च। मे। द्वादश। च। मे। द्वादश। च। मे। षोडश। च। मे। षोडश। च। मे। विंशतिः। च। मे। विंशतिः। च। मे। चतुर्विंशतिरिति चतुःविंशतिः। च। मे। चतुर्विंशतिरिति चतुःविंशतिः। च। मे। अष्टाविंशतिरित्यष्टाविंशतिः। च। मे। अष्टाविंशतिरित्यष्टाविंशतिः। च। मे। द्वात्रिंशत्। च। मे। द्वात्रिंशत्। च। मे। षट्त्रिंशदिति षट्त्रिंशत्। च। मे। षट्त्रिंशदिति षट्त्रिंशत्। च। मे। चत्वारिंशत्। च। मे। चत्वारिंशत्। च। मे। चतुश्चत्वारिंशदिति चतुश्चत्वारिंशत्। च। मे। अष्टाचत्वारिंशदित्यष्टाचत्वारिंशत्। च। मे। युजेन। कल्पन्ताम् ॥

पदार्थान्वयभाषा: -(यजेन) मेल करने अर्थात् योग करने में (मे) मेरी (चतस्रः) चार संख्या (च) और चारि संख्या (मे) मेरी (अष्टौ) आठ संख्या (च) फिर (मे) मेरी (अष्टौ) आठ संख्या (च) और चारि (मे) मेरी (द्वादश) बारह (च) फिर (मे) मेरी (द्वादश) बारह (च) और चारि (मे) मेरी (षोडश) सोलह (च) फिर (मे)

मेरी (षोडश) सोलह (च) और चारि (मे) मेरी (विंशतिः) बीस (च) फिर (मे) मेरी (विंशतिः) बीस (च) और चारि (मे) मेरी (चतुर्विंशतिः) चौबीस (च) फिर (मे) मेरी (चतुर्विंशतिः) चौबीस (च) और चारि (मे) मेरी (अष्टाविंशतिः) अट्ठाईस (च) फिर (मे) मेरी (अष्टाविंशतिः) अट्ठाईस (च) और चारि (मे) मेरी (द्वात्रिंशत्) बत्तीस (च) फिर (मे) मेरी (द्वात्रिंशत्) बत्तीस (च) चारि (मे) मेरी (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (च) फिर (मे) मेरी (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (च) और चारि (मे) मेरी (चत्वारिंशत्) चालीस (च) फिर (मे) मेरी (चत्वारिंशत्) चालीस (च) और चारि (मे) मेरी (चतुश्चत्वारिंशत्) चवालीस (च) फिर (मे) मेरी (चतुश्चत्वारिंशत्) चवालीस (च) और चारि (मे) मेरी (अष्टाचत्वारिंशत्) अड़तालीस (च) आगे भी उक्तविधि से संख्या (कल्पन्ताम्) समर्थ हों, यह प्रथम योगपक्ष है ॥१॥२५॥ अब दूसरा-(यजेन) योग से विपरीत दानरूप वियोगमार्ग से विपरीत संगृहीत (च) और संख्या चारि-चारि के वियोग से जैसे (मे) मेरी (कल्पन्ताम्) समर्थ हों वैसे (मे) मेरी (अष्टाचत्वारिंशत्) अड़तालीस (च) चारि के वियोग से (मे) मेरी (चतुश्चत्वारिंशत्) चवालीस (च) फिर (मे) मेरी (चतुश्चत्वारिंशत्) चवालीस (च) चारि के वियोग से (मे) मेरी (चत्वारिंशत्) चालीस (च) फिर (मे) मेरी (चत्वारिंशत्) चालीस (च) चारि के वियोग से (मे) मेरी (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (च) फिर (मे) मेरी (षट्त्रिंशत्) छत्तीस (च) चारि के वियोग से (मे) मेरी (द्वात्रिंशत्) बत्तीस इस प्रकार सब संख्याओं में जानना चाहिये। यह वियोग से दूसरा पक्ष है ॥२॥२५॥ अब तीसरा पक्ष-(मे) मेरी (चतस्रः) चारि संख्या (च) और (मे) मेरी (अष्टौ) आठ (च) परस्पर गुणी, (मे) मेरी (अष्टौ) आठ (च) और (मे) मेरी (द्वादश) बारह (च) परस्पर गुणी, (मे) मेरी (द्वादश) बारह (च) और (मे) मेरी (षोडश) सोलह (च) परस्पर गुणी, (मे) मेरी (षोडश) सोलह (च) और (मे) मेरी (विंशतिः) बीस (च) परस्पर गुणी, इस प्रकार संख्या आगे भी (यजेन) उक्त वार-वार गुणन से (कल्पन्ताम्) समर्थ हों। यह गुणनविषय से तीसरा पक्ष है ॥३॥२५॥

भावार्थभाषा: -पिछले मन्त्र में एक संख्या को लेकर दो के योग वियोग से विषम संख्या कही। इससे पूर्व मन्त्र में क्रम से आई हुई एक, दो, तीन संख्या को छोड़ इस मन्त्र में चारि के योग वा वियोग से चौथी संख्या को लेकर सम संख्या प्रतिपादन किई। इन दोनों मन्त्रों से विषम संख्या और सम संख्याओं का भेद जानके बुद्धि के अनुकूल कल्पना से सब गणित विद्या जाननी चाहिये ॥

यजुर्वेद » अध्याय:18» मन्त्र:26

वेदो में क्या है?

मन्त्र -

त्र्यवि॑श्च मे त्र्य॒वी च॑ मे दित्य॒वाट् च॑ मे दित्यौ॒ही च॑ मे पञ्चा॑विश्च मे पञ्चा॒वी च॑ मे त्रिव॒त्सश्च॑ मे त्रिव॒त्सा
च॑ मे तुर्य॒वाट् च॑ मे तुर्यौ॒ही च॑ मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥

देवता: पशुविद्याविदात्मा देवता ऋषि: देवा ऋषय: छन्द: ब्राह्मी बृहती स्वर: मध्यम:

पद पाठ -

त्र्यवि॑रिति त्रि॒ऽअविः॑। च। मे। त्र्य॒वीति॑ त्रि॒ऽअवी। च। मे। दित्य॒वाडिति॑ दित्य॒ऽवाट्। च। मे। दित्यौ॒ही। च। मे।
पञ्चा॑विरिति पञ्च॒ऽअविः॑। च। मे। पञ्चा॒विति॑ पञ्च॒ऽअवी। च। मे। त्रिव॒त्स इति॑ त्रि॒ऽवत्सः॑। च। मे। त्रिव॒त्सेति॑
त्रि॒ऽवत्सा। च। मे। तुर्य॒वाडिति॑ तुर्य॒ऽवाट्। च। मे। तुर्यौ॒ही। च। मे। य॒ज्ञेन॑। कल्प॒न्ताम् ॥

पदार्थान्वयभाषा: -(मे) मेरा (त्र्यविः) तीन प्रकार का भेड़ोंवाला (च) और इससे भिन्न सामग्री (मे) मेरी (त्र्यवी) तीन प्रकार की भेड़ोंवाली स्त्री (च) और इनसे उत्पन्न हुए घृतादि (मे) मेरे (दित्यवाट्) खण्डित क्रियाओं में हुए विघ्नों को पृथक् करनेवाला (च) और इसके सम्बन्धी (मे) मेरी (दित्यौही) उन्हीं क्रियाओं को प्राप्त कराने वाली गाय आदि (च) और उसकी रक्षा (मे) मेरा (पञ्चाविः) पाँच प्रकार की भेड़ोंवाला (च) और उसके घृतादि (मे) मेरी (पञ्चावी) पाँच प्रकार की भेड़ोंवाली स्त्री (च) और (मे) मेरा (त्रिवत्सः) तीन बछड़ेवाला (च) और उसके बछड़े आदि (मे) मेरी (त्रिवत्सा) तीन बछड़ेवाली गौ (च) और उसके घृतादि (मे) मेरा (तुर्यवाट्) चौथे वर्ष को प्राप्त हुआ बैल आदि (च) और इसको काम में लाना (मे) मेरी (तुर्यौही) चौथे वर्ष को प्राप्त गौ (च) और इसको शिक्षा ये सब पदार्थ (यज्ञेन) पशुओं के पालन के विधान से (कल्पन्ताम्) समर्थ होंगे ॥

भावार्थभाषा :-

इस मन्त्र में गौ और भेड़ के उपलक्षण से अन्य पशुओं का भी ग्रहण होता है। जो मनुष्य पशुओं को बढ़ाते हैं, वे इनके रसों से आढ्य होते हैं ॥

वेदों में ऊर्जा विज्ञान -

इस कार्य का उद्देश्य वैदिक ऊर्जा सिद्धांतों और संबंधित मौलिक अवधारणाओं का प्रचार करना है, जो भारतीय खगोलविदों को शून्य अनंत और स्व-चालित पारा चक्र की अद्भुत खोजों में मदद करते हैं। लेखकों

वेदों में क्या है?

ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि प्रकृति की कई शक्तियों को समर्पित वैदिक भजन ऊर्जा के मौलिक सिद्धांतों और उनके विविध रूपों जैसे गुरुत्वाकर्षण, गर्मी, प्रकाश, विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा और उनकी विभिन्न अभिव्यक्तियों की जांच करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं; यह वैदिक देवताओं जैसे अग्नि, इंद्र, सूर्य, अश्विन आदि के गुणों, गुणों, गतिविधियों और कार्यों की खोज करके हासिल किया गया है, जो वास्तव में वैदिक ऋषियों द्वारा गाए गए प्राकृतिक बलों का मानवीकरण हैं। वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान, वैदिक खगोल विज्ञान और वैदिक यांत्रिकी चक्रीय सतत गति के सिद्धांत पर आधारित हैं। अग्नि, नासदीय सूक्त और अश्वमसा भजनों को समर्पित भजनों की विस्तार से व्याख्या की गई है ताकि यह दिखाया जा सके कि वैदिक ऊर्जा विज्ञान शास्त्रीय ऊष्मागतिकी के घोर विरोधाभास में है। इस पुस्तक के लेखकों के अनुसार, वैदिक भजनों का एक महत्वपूर्ण सर्वेक्षण दर्शाता है कि स्व-चलित सिद्धांत वैदिक दर्शन, यांत्रिकी, खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान का केंद्र है, जिसका विस्तृत अध्ययन "वैदिक ऊर्जा विज्ञान" की नींव बनाता है। "वैदिक ऊर्जा विज्ञान" की जांच एक समग्र विश्वदृष्टि की ओर ले जाती है जो थर्मोडायनामिक्स के अध्ययन से उभरने वाले खंडित विश्वदृष्टि के साथ विरोधाभासी है। "वैदिक ऊर्जा विज्ञान" की खोज समकालीन दुनिया में ज्ञान की एक नई सीमा का निर्माण करती है, जो मानव जाति के लिए जानने और महसूस करने के लिए संभव है, जो वर्तमान वैज्ञानिक अवधारणाओं से बहुत आगे तक फैली हुई है, और जो ऊर्जा के वर्तमान प्रतिमानों के पुनर्मूल्यांकन और विज्ञान की गलत अवधारणाओं, कानूनों और सिद्धांतों और वैज्ञानिक ज्ञान की सभी सीमाओं के पुनर्मूल्यांकन की तत्काल मांग करती है। स्व-चलित वाहनों पर विशेष जोर देने के साथ ऋषियों के विभिन्न अद्भुत आविष्कारों का उदाहरण देकर कर्म, भक्ति और मोक्ष के दर्शन की खोज की गई है। संक्षेप में ऊर्जा एक है और वैदिक अद्वैतवादी सिद्धांतों और क्वांटम यांत्रिकी, सापेक्षता जैसे भौतिकी के आधुनिक सिद्धांतों के बीच समानताएं खींची गई हैं। गुरुत्वाकर्षण के विभिन्न गुणों का पता लगाने के लिए वैदिक देवता इंद्र की व्यापक जांच की गई है। गुरुत्वाकर्षण और ऊष्मा के संबंध में रूप और कार्य, संरचना और अभिव्यक्ति के बीच संबंध स्व-चलित, स्व-विनियमित और स्व-विकसित ब्रह्मांड की अवधारणा की ओर ले जाता है। उन्हीं सिद्धांतों को स्व-चलित गुरुत्वाकर्षण चक्र के निर्माण पर लागू किया गया है जिसे वास्तव में भारतीय खगोलविदों द्वारा प्रस्तावित किया गया था और

बाद में जर्मनी में पार्षद ऑफ़िरेस (1681 - 1745) द्वारा इसका आविष्कार किया गया था। स्व-चलने के सिद्धांत को नए प्रकाश में समर्थन देने के लिए ऑफ़िरेस की कहानी को फिर से सुनाया गया है। इस कार्य का उद्देश्य वैदिक ऊर्जा सिद्धांतों और संबंधित मौलिक अवधारणाओं का प्रचार करना है, जो भारतीय खगोलविदों को शून्य अनंत और स्वयं संचालित पारा चक्र की अद्भुत खोजों में सक्षम बनाते हैं। लेखकों ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि प्रकृति की कई शक्तियों को समर्पित वैदिक भजन ऊर्जा के मौलिक सिद्धांतों और उनके विविध रूपों जैसे गुरुत्वाकर्षण, गर्मी, प्रकाश, विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा और उनकी विभिन्न अभिव्यक्तियों की जांच करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं; यह वैदिक देवताओं जैसे अग्नि, इंद्र, सूर्य, अश्विन आदि की विशेषताओं, गुणों, गतिविधियों और कार्यों की खोज करके प्राप्त किया गया है, जो वास्तव में वैदिक ऋषियों द्वारा गाए गए प्राकृतिक बलों का मानवीकरण हैं। वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान, वैदिक खगोल विज्ञान और वैदिक यांत्रिकी चक्रीय सतत गति के सिद्धांत पर आधारित हैं। अग्नि, नासदीय सूक्त और अस्यवंशीय भजनों को समर्पित भजनों की विस्तार से व्याख्या की गई है ताकि यह दिखाया जा सके कि वैदिक ऊर्जा विज्ञान शास्त्रीय ऊष्मागतिकी के विपरीत है। इस पुस्तक के लेखकों के अनुसार, वैदिक भजनों का एक महत्वपूर्ण सर्वेक्षण दर्शाता है कि स्व-चलित सिद्धांत वैदिक दर्शन, यांत्रिकी, खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान का केंद्र है, जिसका विस्तृत अध्ययन "वैदिक ऊर्जा विज्ञान" की नींव बनाता है। "वैदिक ऊर्जा विज्ञान" की जांच एक समग्र विश्वदृष्टि की ओर ले जाती है जो थर्मोडायनामिक्स के अध्ययन से उभरने वाले खंडित विश्वदृष्टि के विपरीत है। "वैदिक ऊर्जा विज्ञान" की खोज समकालीन दुनिया में ज्ञान की एक नई सीमा का निर्माण करती है, जो मानव जाति के लिए जानने और महसूस करने के लिए संभव है, जो वर्तमान वैज्ञानिक अवधारणाओं से बहुत आगे तक फैली हुई है, और जो ऊर्जा के वर्तमान प्रतिमानों के पुनर्मूल्यांकन और विज्ञान की गलत अवधारणाओं, कानूनों और सिद्धांतों और वैज्ञानिक ज्ञान की सभी सीमाओं के पुनर्मूल्यांकन की तत्काल मांग करती है। स्व-चलित वाहनों पर विशेष जोर देने के साथ ऋषियों के विभिन्न अद्भुत आविष्कारों का उदाहरण देकर कर्म, भक्ति और मोक्ष के दर्शन की खोज की गई है। संक्षेप में ऊर्जा एक है और वैदिक अद्वैतवादी सिद्धांतों और क्वांटम यांत्रिकी,

सापेक्षता जैसे भौतिकी के आधुनिक सिद्धांतों के बीच समानताएं खींची गई हैं। वैदिक देवता इंद्र की व्यापक रूप से जांच की गई है ताकि गुरु के विभिन्न गुणों का पता लगाया जा सके।

आंतरिक आकर्षण बल - (Intramolecular Force of Attraction)

अथर्ववेद » काण्ड:13» सूक्त:1» पर्यायः:0» मन्त्र:6

रोहि॑तो द्या॒वापृ॑थि॒वी ज॑जान॒ तत्र॑ तन्तु॑ परमे॒ष्ठी त॑तान। तत्र॑ शिश्रि॒येऽज॑ एक॒पादोऽदृ॑हद्द्या॒वापृ॑थि॒वी बले॑न ॥

देवता: अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः ऋषिः ब्रह्मा छन्दः त्रिष्टुप् स्वरः अध्यात्म प्रकरण सूक्त

पद पाठ -

रोहितः । द्यावापृथिवी । इति । जजान । तत्र । तन्तुम् । परमेऽस्थी । ततान । तत्र । शिश्रिये । अजः ।
एकऽपादः । अदृहत् । द्यावापृथिवी इति । बलेन ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(रोहितः) सबके उत्पन्न करनेवाले [परमेश्वर] ने (द्यावापृथिवी) सूर्य और पृथिवी को (जजान) उत्पन्न किया, (तत्र) उस में (परमेष्ठी) सबसे ऊँचे पदवाले [उस परमेश्वर] ने (तन्तुम्) तन्तु [सूत्रात्मा वायु] को (ततान) फैलाया। (तत्र) उसमें (अजः) वह अजन्मा (एकपादः) एक डगवाला [सब जगत् में एकरस व्यापक] (शिश्रिये) ठहरा, उसने (द्यावापृथिवी) सूर्य और पृथिवी को (बलेन) अपने बल से (अदृहत्) दृढ़ किया ॥

भावार्थभाषा:-

जैसे परमात्मा ने सब सूर्य पृथ्वी आदि लोकों को उत्पन्न करके, और उनके भीतर सूत्रात्मा वायु वा आकर्षण रखकर सबको नियम में बाँधा है, वैसे ही बलवान् पुरुष अपने इन्द्रियों और सब लोगों को विविध प्रकार अपने वश में रखे ॥

सौरमंडल और उसके प्रकाश पर ऋग्वेद -

ऋग्वेद » मण्डल:1» सूक्त:164» मन्त्र:1

अ॒स्य वा॒मस्य॑ प॒लितस्य॑ होतु॒स्तस्य॑ भ्रा॒ता म॒ध्य॒मो अ॒स्त्य॒श्नः॑। तृ॒ती॒यो भ्रा॒ता घृ॒तपृ॑ष्ठो अ॒स्यात्रा॑प॒श्यं वि॒श॒पति॑
सु॒प्तपु॑त्रम् ॥

वेदों में क्या है?

देवता: विश्वेदेवा: ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य: छन्द: विराट्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

अस्य। वामस्य। पलितस्य। होतुः। तस्य। भ्राता। मध्यमः। अस्ति। अश्नः। तृतीयः। भ्राता। घृतपृष्ठः। अस्य।
अत्र। अपश्यम्। विशपतिम्। सप्तपुत्रम् ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(वामस्य) शिल्प के गुणों से प्रशंसित (पलितस्य) वृद्धावस्था को प्राप्त (अस्य) इस सज्जन का बिजुलीरूप पहिला, (होतुः) देने वा हवन करनेवाले (तस्य) उसके (भ्राता) बन्धु के समान (अश्नः) पदार्थों का भक्षण करनेवाला (मध्यमः) पृथिवी आदि लोकों में प्रसिद्ध हुआ दूसरा और (घृतपृष्ठः) घृत वा जल जिसके पीठ पर अर्थात् ऊपर रहता वह (अस्य) इसके (भ्राता) भ्राता के समान (तृतीयः) तीसरा (अस्ति) है, (अत्र) यहाँ (सप्तपुत्रम्) सात प्रकार के तत्त्वों से उत्पन्न (विशपतिम्) प्रजाजनों की पालना करनेवाले सूर्य को मैं (अपश्यम्) देखूँ ॥

भावार्थभाषा:-

इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। इस जगत् में तीन प्रकार का अग्नि है-एक बिजुलीरूप, दूसरा काष्ठादि में जलता हुआ भूमिस्थ और तीसरा वह है जो कि सूर्यमण्डलस्थ होकर समस्त जगत् की पालना करता है ॥

ऋग्वेद » मण्डल:1» सूक्त:164» मन्त्र:2

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा। त्रिणाभि चक्रमजरमनुर्व यत्रेमा विश्वा भुवनाधि
तस्थुः ॥

देवता: विश्वेदेवा: ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य: छन्द: त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

सुप्त। युञ्जन्ति। रथम्। एकःचक्रम्। एकः। अश्वः। वहति। सुप्तःनामा। त्रिःनाभिः। चक्रम्। अजरम्। अनर्वम्।
यत्र। इमा। विश्वा। भुवना। अधि। तस्थुः ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(यत्र) जहाँ (एकचक्रम्) एक सब कलाओं के घूमने के लिये जिसमें चक्कर है उस (रथम्) विमान आदि यान को (सप्तनामा) सप्तनामोंवाला (एकः) एक (अश्वः) शीघ्रगामी वायु वा अग्नि (वहति) पहुँचाता है वा जहाँ (सप्त) सात कलों के घर (युञ्जन्ति) युक्त होते हैं वा जहाँ (इमा) ये (विश्वा) समस्त (भुवना) लोकलोकान्तर (अधि, तस्थुः) अधिष्ठित होते हैं वहाँ (अनर्वम्) प्राकृत प्रसिद्ध घोड़ों से रहित (अजरम्) और जीर्णता से रहित (त्रिनाभि) तीन जिसमें बन्धन उस (चक्रम्) एक चक्कर को शिल्पी जन स्थापन करें ॥

भावार्थभाषा:-

सूर्य के एक पहिए वाले रथ में जुते हुए सात घोड़े ही उसको खींचते हैं। सात नामों वाला एक ही घोड़ा रथ को खींचता है। दृढ़ और नित्य नवीन तीन नाभियाँ उस पहिए में हैं। उस में सारा विश्व स्थित है।

आधुनिक विज्ञान कहता है कि साधारण प्रकाश में सात रंग होते हैं।

ऋग्वेद » मण्डल:1» सूक्त:164» मन्त्र:3

इमं रथमधि ये सुप्त तस्थुः सुप्तचक्रं सुप्त वहन्त्यश्वाः। सुप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सुप्त नाम ॥

देवता: विश्वेदेवा: ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य: छन्द: निचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

इमम्। रथम्। अधि। ये। सुप्त। तस्थुः। सुप्तचक्रम्। सुप्त। वहन्ति। अश्वाः। सुप्त। स्वसारः। अभि। सम्।
नवन्ते। यत्र। गवाम्। निहिता। सुप्त। नाम ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

(यत्र) जिसमें (गवाम्) किरणों के (सप्त) सात (नाम) नाम (निहिता) निरन्तर धरे स्थापित किये हुए हैं और वहाँ (स्वसारः) बहिनों के समान वर्तमान (सप्त) सात कला (अभि, सं, नवन्ते) सामने मिलती हैं (सप्त)

सात (अश्वाः) शीघ्रगामी अग्नि पदार्थ (वहन्ति) पहुँचाते हैं उस (इमम्) इस (सप्तचक्रम्) सात चक्करवाले (रथम्) रथ को (ये) जो (सप्त) सातजन (अधि, तस्थुः) अधिष्ठित होते हैं वे इस जगत् में सुखी होते हैं ॥

भावार्थभाषा:-

सात पहियों वाले रथ में जुते हुए सात घोड़े ही उसको खींचते हैं। सात किरण रूपी बहिनें इसके सामने चलती हैं एवं सात गाएं इस रथ में बैठी हैं।

आधुनिक विज्ञान कहता है कि सूर्य सौरमंडल का केंद्र है।

ऋग्वेद » मण्डल:1 » सूक्त:164 » मन्त्र:11

द्वादशारं नहि तज्जरायुर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य। आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः ॥

देवता: विश्वेदेवा: ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य: छन्द: निचृत्त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

पद पाठ -

द्वादशऽअरम्। नहि। तत्। जरायु। वर्वर्ति। चक्रम्। परि। द्याम्। ऋतस्य। आ। पुत्राः। अग्ने। मिथुनासः। अत्र। सप्त। शतानि। विंशतिः। च। तस्थुः ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

हे (अग्ने) विद्वान् ! तू (अत्र) इस संसार में जो (द्वादशारम्) जिसके बारह अङ्ग हैं वह (चक्रम्) चक्र के समान वर्तमान संवत्सर (द्याम्) प्रकाशमान सूर्य के (परि, वर्वर्ति) सब ओर से निरन्तर वर्तमान है (तत्) वह (जरायु) हानि के लिये (नहि) नहीं होता है जो इस संसार में (ऋतस्य) सत्य कारण से (सप्त) सात (शतानि) सौ (विंशतिः) बीस (च) भी (मिथुनासः) संयोग से उत्पन्न हुए (पुत्राः) पुत्रों के समान वर्तमान तत्त्व विषय (आ, तस्थुः) अपने अपने विषयों में लगे हैं, उनको जान ॥

भावार्थभाषा:-

सत्यरूपी सूर्य का बारह अरों वाला पहिया स्वर्ग के चारों ओर बार-बार चलता है और कभी पुराना नहीं होता, हे आदित्यरूप अग्नि! तीन सौ साठ दिन एवं रातों के रूप में तुममें सात सौ बीस पुत्रपुत्रियाँ रहती हैं।

वेदो में क्या है?

ऋग्वेद » मण्डल:1» सूक्त:164» मन्त्र:12

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धं पुरीषिणम्। अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर
आहुरर्पितम् ॥

देवता: विश्वेदेवा: ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य: छन्द: जगती स्वर: निषाद:

पद पाठ -

पञ्चपादम्। पितरम्। द्वादशआकृतिम्। दिवः। आहुः। परे। अर्धं। पुरीषिणम्। अथ। इमे। अन्ये। उपरे।
विचक्षणम्। सप्तचक्रे। षट्सरे। आहुः। अर्पितम् ॥

पदार्थान्वयभाषा:

हे मनुष्यो ! तुम (पञ्चपादम्) क्षण, मुहूर्त, प्रहर, दिवस, पक्ष, ये पाँच पग जिसके (पितरम्) पिता के तुल्य पालना करानेवाले (द्वादशाकृतिम्) बारह महीने जिसका आकार (पुरीषिणम्) और मिले हुए पदार्थों की प्राप्ति वा हिंसा करानेवाले अर्थात् उनकी मिलावट को अलग अलग करानेहारे संवत्सर को (दिवः) प्रकाशमान सूर्य के (परे) परले (अर्धे) आधे भाग में विद्वान् (आहुः) कहते हैं बताते हैं (अथ) इसके अनन्तर (इमे) ये (अन्ये) और विद्वान् जन (षडरे) जिसमें छः ऋतु आरारूप और (सप्तचक्रे) सात चक्र घूमने की परिधि विद्यमान उस (उपरे) मेघमण्डल में (विचक्षणम्) वाणी के विषय को (अर्पितम्) स्थापित (आहुः) कहते हैं, उसको जानो ॥

भावार्थभाषा:

ऋतुओं रूपी पांच चरणों और मासों रूपी बारह आकृतियों वाले आदित्य आकाश के परवर्ती अर्द्धभाग में रहते हैं। कुछ लोग उन्हें जलदाता भी कहते हैं। छः अरों और सात चक्रों (ऋतुओं एवं किरणों) वाले रथ पर बैठे हुए तेजस्वी आदित्य को कुछ लोग अर्पित भी कहते हैं। ये अर्पित आकाश के दूसरे भाग में रहते हैं।

ऋग्वेद » मण्डल:1» सूक्त:164» मन्त्र:13

पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा। तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शौर्यते
सनाभिः ॥

देवता: विश्वेदेवा: ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य: छन्द: त्रिष्टुप् स्वर: धैवत:

वेदो में क्या है?

पद पाठ -

पञ्चऽअरे। च॒क्रे। प॒रिऽवर्तमाने। तस्मिन्। आ। त॒स्थुः। भुव॑नानि। विश्वा॑। तस्य॑। न। अक्षः॑। त॒प्य॒ते। भूरि॑ऽभारः।
स॒नात्। ए॒व। न। शी॒र्य॒ते। स॒ना॑भिः ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

हे विद्वानो ! (पञ्चारे) जिसमें पाँच तत्त्व अरारूप हैं (परिवर्तमाने) और जो सब ओर से वर्तमान (तस्मिन्) उस (चक्रे) पहिये के समान ढुलकते हुए पञ्चतत्त्व के पञ्चीकरण में (विश्वा) समस्त (भुवनानि) लोक (आ, तस्थुः) अच्छे प्रकार स्थिर होते हैं (तस्य) उसका (अक्षः) अगला भाग अर्थात् जो उससे प्रथम ईश्वर है वह (न) नहीं (तप्यते) कष्ट को प्राप्त होता अर्थात् संसार के सुख-दुःख का अनुभव नहीं करता (सनाभिः) और जिसका समान बन्धन है अर्थात् क्रिया के साथ में लगा हुआ है और (भूरिभारः) जिनमें बहुत भार हैं बहुत कार्य कारण आरोपित हैं वह काल (सनात्) सनातनपन से (नैव) नहीं (शीर्यते) नष्ट होता ॥ १३ ॥

भावार्थभाषा: -

पांच ऋतुरूपी अरों वाला सूर्य का संवत्सररूपी चक्र घूमता है। समस्त प्राणी उसी में रहते हैं। उसका भारी अक्ष कभी नहीं थकता। उसकी नाभि सदा एक सी रहती है, कभी टूटती नहीं।

आधुनिक विज्ञान ने बताया है कि बारिश कैसे होती है।

ऋग्वेद » मण्डल:1» सूक्त:164» मन्त्र:51

स॒मा॒न॒मे॒त॒दु॒द॒क॒मु॒च्यै॒त्य॒व॒ चा॒ह॒भिः॑। भूमिं॑ प॒र्जन्या॑ जि॒न्व॑न्ति दि॒वं जि॒न्व॑न्त्य॒ग्नयः॑ ॥

देवता: सूर्यः पर्जन्योऽग्नयो वा ऋषिः दीर्घतमा औचथ्यः छन्दः विराडनुष्टुप् स्वरः गान्धारः

पद पाठ -

स॒मा॒न॒म्। ए॒तत्। उ॒द॒क॒म्। उ॒त्। च॒। ए॒ति॒। अ॒व॒। च॒। अ॒ह॑ऽभिः। भूमि॑म्। प॒र्जन्याः॑। जि॒न्व॑न्ति। दि॒वम्।
जि॒न्व॑न्ति। अ॒ग्नयः॑ ॥

पदार्थान्वयभाषा:-

जो (उदकम्) जल (अहभिः) बहुत दिनों से (उत्, एति) ऊपर को जाता अर्थात् सूर्य के ताप से कण कण हो और पवन के बल से उठकर अन्तरिक्ष में ठहरता (च) और (अव) नीचे को (च) भी आता अर्थात् वर्षा काल

वेदो में क्या है?

पाय भूमि पर वर्षता है उसके (एतत्) यह पूर्वोक्त विद्वानों का ब्रह्मचर्य अग्निहोत्र आदि धर्मादि व्यवहार (समानम्) तुल्य है। इसीसे (पर्जन्याः) मेघ (भूमिम्) भूमि को (जिन्वन्ति) तृप्त करते और (अग्नयः) बिजुली आदि अग्नि (दिवम्) अन्तरिक्ष को (जिन्वन्ति) तृप्त करते अर्थात् वर्षा से भूमि पर उत्पन्न जीव जीते और अग्नि से अन्तरिक्ष, वायु, मेघ आदि शुद्ध होते हैं ॥

भावार्थभाषा:-

ब्रह्मचर्य आदि अनुष्ठानों में किये हुए हवन आदि से पवन और वर्षा जल की शुद्धि होती है उससे शुद्ध जल वर्षने से भूमि पर उत्पन्न हुए जीव वे तृप्त होते हैं। इससे विद्वानों का पूर्वोक्त ब्रह्मचर्यादि कर्म जल के समान है जैसे ऊपर जाता और नीचे आता वैसे अग्निहोत्रादि से पदार्थ का ऊपर जाना और नीचे आना है ॥

9. आधुनिक विज्ञान बनाम वैदिक विज्ञान

आधुनिक विज्ञान और वेदों के बीच बहुत अंतर है और यह उनके आधारभूत सिद्धांतों, पद्धतियों और उद्देश्यों से उपजा है। यहाँ दोनों की तुलना की गई है:

आधुनिक विज्ञान -

1. अनुभवजन्य आधार:

अवलोकन और प्रयोग: आधुनिक विज्ञान अनुभवजन्य साक्ष्य, अवलोकन और प्रयोग पर बहुत अधिक निर्भर करता है। परिकल्पनाओं का परीक्षण नियंत्रित प्रयोगों के माध्यम से किया जाता है।

पुनरावृत्ति और सत्यापन: वैज्ञानिक परिणामों को दूसरों द्वारा दोहराया और सत्यापित किया जाना चाहिए। सहकर्मी समीक्षा और प्रतिकृति वैज्ञानिक पद्धति के आवश्यक पहलू हैं।

2. पद्धति:

वैज्ञानिक पद्धति: इसमें अवलोकन करना, परिकल्पना बनाना, प्रयोग करना, परिणामों का विश्लेषण करना और निष्कर्ष निकालना शामिल है।

मात्रात्मक विश्लेषण: डेटा का विश्लेषण करने और पूर्वानुमान लगाने के लिए गणितीय मॉडल और सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करता है।

3. ज्ञान की प्रकृति:

अनंतिम और विकासशील: वैज्ञानिक ज्ञान हमेशा संशोधन और सुधार के लिए खुला रहता है क्योंकि नए साक्ष्य उपलब्ध होते हैं।

- उद्देश्य: डेटा की व्याख्या में व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और विश्वासों को कम करने, वस्तुनिष्ठता के लिए लक्ष्य।

4. दायरा:

- भौतिक दुनिया पर ध्यान केंद्रित करना: मुख्य रूप से भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और खगोल विज्ञान सहित प्राकृतिक दुनिया को समझने से संबंधित है।

- तकनीकी अनुप्रयोग: विज्ञान में प्रगति अक्सर तकनीकी नवाचारों और व्यावहारिक अनुप्रयोगों की ओर ले जाती है।

वेद -

1. आध्यात्मिक और दार्शनिक आधार:

- प्रकट ज्ञान: वेदों को हिंदू धर्म में ईश्वरीय रूप से प्रकट ग्रंथ माना जाता है, जिसमें आध्यात्मिक और दार्शनिक शिक्षाएँ शामिल हैं।

- सहज और चिंतनशील: वेदों में ज्ञान अक्सर ध्यान, अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से प्राप्त होता है।

2. कार्यप्रणाली:

- शास्त्रीय अधिकार: वेद आधिकारिक ग्रंथ हैं और उनका ज्ञान पारंपरिक रूप से विश्वास और श्रद्धा के आधार पर स्वीकार किया जाता है।

- अनुष्ठान और अभ्यास: दिव्य को समझने और अनुभव करने के लिए अनुष्ठानों, मंत्रों और आध्यात्मिक प्रथाओं पर जोर दें।

3. ज्ञान की प्रकृति:

- शाश्वत और अपरिवर्तनीय: वैदिक ज्ञान को ऋषियों और द्रष्टाओं द्वारा प्रकट किया गया कालातीत और अपरिवर्तनीय माना जाता है।

- व्यक्तिपरक और अनुभवात्मक: व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव और व्यक्तिपरक समझ पर जोर देता है।

4. दायरा:

- समग्र दृष्टिकोण: ब्रह्मांड विज्ञान, धर्मशास्त्र, दर्शन, नैतिकता और अनुष्ठानों सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करता है।

- आंतरिक अनुभव पर ध्यान केंद्रित करना: आध्यात्मिक ज्ञान और स्वयं और ब्रह्मांड की समझ की ओर व्यक्तियों का मार्गदर्शन करना।

वेदों में क्या है?

सारांश -

- आधुनिक विज्ञान अनुभवजन्य साक्ष्य और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है, जो भौतिक और प्राकृतिक दुनिया पर ध्यान केंद्रित करता है, और हमेशा विकसित होता रहता है।

- वेद आध्यात्मिक ग्रंथ हैं जो आंतरिक ज्ञान, प्रकट ज्ञान और शाश्वत सत्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो व्यक्तियों को आध्यात्मिक समझ की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

दोनों के अपने अनूठे दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली हैं, जो अलग-अलग तरीकों से मानव ज्ञान और समझ में योगदान करते हैं।

ऋग्वेद, चार वेदों में सबसे पुराना, मुख्य रूप से भजनों और धार्मिक मंत्रों पर केंद्रित है, लेकिन इसमें ऐसी अंतर्दृष्टि भी है जिसे वैज्ञानिक ज्ञान के शुरुआती रूपों के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। यहाँ कुछ प्रमुख पहलू दिए गए हैं जहाँ ऋग्वेद वैज्ञानिक अवधारणाओं को छूता है:

खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान -

1. आकाशीय विवरण:

ऋग्वेद में सूर्य (सूर्य), चंद्रमा (चंद्र) और सितारों सहित विभिन्न खगोलीय पिंडों का संदर्भ है। उदाहरण के लिए, भजन आकाश में सूर्य की गति का वर्णन करते हैं, समय और मौसमों को चिह्नित करते हैं, जो सौर चक्र की प्रारंभिक समझ को इंगित करता है।

सूर्य को ऊर्जा और जीवन के केंद्रीय स्रोत के रूप में वर्णित करते हुए, एक हेलियोसेंट्रिक मॉडल की अवधारणा का संकेत दिया गया है।

2. ग्रहण और खगोलीय घटनाएँ:

ग्रहण का वर्णन रूपक रूप से किया जाता है, जैसे कि राक्षस राहु द्वारा सूर्य या चंद्रमा को निगलने का मिथक, जो इन खगोलीय घटनाओं के बारे में जागरूकता को दर्शाता है।

गणित -

1. संख्याएँ और गिनती:

ऋग्वेद में बड़ी संख्याओं और महत्वपूर्ण अंकों के उपयोग का उल्लेख है, जो बड़ी मात्राओं और गणितीय अवधारणाओं की समझ को दर्शाता है। 10^{12} तक की संख्याओं के लिए शब्दों का उल्लेख किया गया है, जो एक परिष्कृत अंक प्रणाली का संकेत देता है।

2. ज्यामिति:

हालांकि आधुनिक अर्थों में स्पष्ट रूप से ज्यामितीय नहीं है, वेदियों और अग्नि कुंडों (यज्ञ) के निर्माण के लिए सटीक माप और ज्यामितीय सिद्धांतों की समझ की आवश्यकता होती है।

चिकित्सा -

1. आयुर्वेद की उत्पत्ति:

ऋग्वेद में ऐसे भजन हैं जो जड़ी-बूटियों और उनके उपचार गुणों का उल्लेख करते हैं, जिसने आयुर्वेद, पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धति की नींव रखी। अथर्ववेद, एक बाद का वैदिक ग्रंथ, अधिक विस्तृत औषधीय प्रथाओं के साथ इस ज्ञान का विस्तार करता है।

पर्यावरण विज्ञान -

1. पारिस्थितिकी और प्राकृतिक तत्व:

भजन अक्सर नदियों, जंगलों और पहाड़ों जैसे प्राकृतिक तत्वों का संदर्भ देते हैं, जो प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करने और उसका सम्मान करने के महत्व पर जोर देते हैं। यह पर्यावरण जागरूकता और संधारणीय जीवन के शुरुआती रूप को दर्शाता है।

धातुकर्म और पदार्थ विज्ञान -

1. धातुओं का वर्णन:

ऋग्वेद में सोने और लोहे सहित विभिन्न धातुओं और अनुष्ठानों और दैनिक जीवन में उनके उपयोग का उल्लेख है। यह धातुकर्म और पदार्थ विज्ञान की प्रारंभिक समझ को दर्शाता है।

कृषि विज्ञान -

1. खेती के तरीके:

- ऋग्वेद में भजन कृषि पद्धतियों को भी छूते हैं, जिसमें खेतों की जुताई और बीज बोना शामिल है, जो कृषि विज्ञान की समझ और मानव जीवन को बनाए रखने में कृषि के महत्व को दर्शाता है।

स्रोत -

-ऋग्वेद संहिता: सभी संदर्भों के लिए प्राथमिक स्रोत ऋग्वेद ही है, जो विभिन्न अनुवादों और टिप्पणियों में उपलब्ध है।

- संस्कृत साहित्य: वैदिक साहित्य पर विद्वत्तापूर्ण कार्य, जैसे कि सायण और अन्य वैदिक विद्वानों द्वारा।

- शैक्षणिक अनुसंधान: इंडोलॉजी और विज्ञान के इतिहास के क्षेत्रों में आधुनिक विद्वानों द्वारा अध्ययन और व्याख्याएँ, जैसे कि फ्रिट्स स्टाल और सुभाष काक द्वारा।

10.संदर्भों की सूची

1. सायन आचार्य द्वारा ऋग्वेद
2. महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा ऋग्वेददिभाष्य भूमिका
3. सत्यार्थ प्रकाश - महर्षि दयानंद सरस्वती
4. महर्षि ब्रह्ममुनि द्वारा वेद

ऋतं च सत्यं चाभीद्भ्रातृपुंसोऽध्यजायत
। ततो रात्र्यंजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥

ऋग्वेद 10.190.1

समुद्रादर्णवादधिं संवत्सरो अंजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वृशी ॥

ऋग्वेद 10.190.2

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमंकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

ऋग्वेद 10.190.3

सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व उत्पत्ति, स्थितिविषयक मूलज्ञान वेद तथा उपादानकारण प्रकृतिरूप अव्यक्त सृष्टिकर्ता परमेश्वर के ज्ञानमय तप से उसके सम्मुख आते हैं। दोनों के संसर्ग से महाप्रलय का अन्त प्रलयरूप रात्रि बनती है, उससे गतिवाला हलचल करता हुआ परमाणुओं का समुद्र प्रकट हो जाता है, यह हलचल सृष्टिप्रवाह को चालू करती है ॥१॥

गतिमान् परमाणुसमुद्र के पश्चात् विश्व का काल नियत होता है, फिर गति करते हुए प्रत्येक पिण्ड के दिन-रात परमात्मा नियत करता है ॥२॥

संसार को धारण करनेवाले विधाता परमात्मा ने सूर्य चन्द्रमा द्युलोक पृथिवीलोक अन्तरिक्षलोक और अन्य लोक-लोकान्तरों को पूर्व सृष्टि में जैसे रचा था, वैसे ही इस सृष्टि में रचा है, आगे भी रचता रहेगा ॥३॥